1.5
VHP

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

वैदिक लेखमाला का ९५ वाँ पुष्प

महाभारत का सार

भाग-१

आदिपर्व का सार

लेखक

वैदिक मिशनरी कमलेशकुमार आर्य अग्निहोत्री

प्रकाशक - पं० कमलेशकुमार वैदिक लेखमाला प्रकाशक न्यास
आर्यसमाज मदनगंज - किशनगढ़ (राजस्थान) पिनकोड ३०५ ८०१
दूरभाष - कार्यालय (०१४६३) २४४०७० निवास (०१४५) २६६२६६२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वमत

श्री पं०श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी द्वारा अनुवादित महाभारत पर आधारित **"महाभारत का सार" वैदिक लेखमाला** के ९५ वें पुष्प से १०० वें पुष्प तक, अर्थात् ६ भागों में हमने प्रकाशित करवाया है । इसलिये कि आज व्यस्तता के युग में अधिकांश व्यक्ति सम्पूर्ण महाभारत पढ़ने के लिये समय नहीं निकाल पाते ।

महाभारत द्वापरयुग का प्रामाणिक इतिहास है, किन्तु इसमें सृष्टिक्रम एवं प्रत्यक्षादि प्रमाणों के विरुद्ध लिखे प्रसंगों को पढ़कर कई मनीषी विद्वान् इसे काल्पनिक ग्रन्थ मान बैठे हैं । यह स्वाभाविक ही है कि इस में लिखी पौराणिक मान्यताओं पर आधारित काल्पनिक कहानियों को पढ़कर कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति इसे इतिहास नहीं मान सकता । हमने इस ग्रन्थ के ऐतिहासिक पक्ष को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है ।

महाभारत ग्रन्थ में ऐतिहासिक विवरण से अधिक काल्पनिक कथाएँ और अनेक शिक्षाप्रद **उपदेश** हैं । इनमें से हमने केवल **उद्योगपर्व** के बहुचर्चित प्रसंग धृतराष्ट्र-विदुर संवाद को **"महात्मा विदुर की वाणी का सार"** नामक ९८ वें पुष्प में पृथक् से प्रकाशित करवाया है ।

इन छः पुष्पों में हमने जो लिखा उनमें ऐसे भी प्रसंग हैं, जिन्हें हम काल्पनिक मानते हैं, ऐतिहासिक नहीं । अर्थात् आदिपर्व से **मौसलपर्व** तक के कई प्रसंगों और **स्वर्गारोहण** पर्व के अधिकांश भाग का हमारी दृष्टि में इतिहास से कोई सम्बन्ध नहीं है । हमने महाभारत की **समीक्षा** नहीं की, केवल यह बताया है कि इस ग्रन्थ में क्या लिखा है ।

इसके अतिरिक्त हम अपने पाठकों को यह भी बताना चाहते हैं कि हमने पढ़ा उस **महाभारत** में यह कहीं नहीं लिखा कि **दुर्योधन** को **द्रौपदी** ने अन्धे का पुत्र बताया । **श्रीकृष्ण** ने **द्रौपदी** की साड़ी बढ़ाई । एकान्त में मिलने आई **उर्वशी** को अर्जुन ने माता कहा । **अभिमन्यु** ने सुभद्रा के गर्भ में ही **चक्रव्यूह** तोड़ने की जानकारी प्राप्त कर ली । **अर्जुन** के लिये श्रीकृष्ण ने चिता बना के पहले सूर्य को अदृश्य कर दिया, फिर सूर्य की साक्षी में **जयद्रथ** को मरवाया । आदि आदि...

द्रौपदी के पाँच पतियों और **श्री कृष्ण** की अनेक स्त्रियों तथा सन्तानों का स्पष्ट उल्लेख महाभारत में है । महाभारत काल में पाण्डवों के साथ रहे ब्राह्मण मांसाहारी थे और **महाभारत** की कथा सुननेवाले के पाप नष्ट हो जाते हैं । इत्यादि मान्यताओं का संकेत हमने **वैदिक लेखमाला** के १०० वें पुष्प के अन्त में समप्रमाण किया है. **उसे हम प्रक्षिप्त मानते हैं** ।

हमारे इस प्रयास से सर्व साधारण को सार रूप में **द्वापरयुग** के इतिहास की जानकारी अवश्य होगी, इसी विश्वास के साथ -

लेखक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदिपर्व का सार

(अध्याय २२५, श्लोक ७२०३)

एक समय **लोमहर्षण** के पुत्र सूतवंशी **उग्रश्रवा** ने **नैमिषारण्य** में **शौनक** के बारह वर्ष तक चलनेवाले यज्ञ में आये हुए ऋषियों के समक्ष कुरुवंश, यदुवंश और भरतवंश की उत्पत्ति का इतिहास सुनाया, एवं महाभारत का महत्व बताया। साथ ही महाभारत ग्रन्थ के किस अध्याय में कितने श्लोक हैं, और उनमें क्या लिखा है, यह जानकारी दी। फिर देवों की कुतिया **सरमा** के शाप, ऋषिपुत्र **सोमश्रवा**, **धौम्य** ऋषि के शिष्य **अरुणि**, **उपमन्यु** तथा **वेद** की गुरु भक्ति और **उतंक** द्वारा राजा **जनमेजय** को **तक्षक** से बदला लेने हेतु की गई प्रेरणा सम्बन्धी वर्णन करके भृगुवंश **जरत्कारु, आस्तीक, कश्यप, कद्रू, विनता, गरुड़, उचैःश्रवा, समुद्र मन्थन, बालखिल्य, इन्द्र, शेष, वासुकि, परिक्षित्, शृंगी, तक्षक, जनमेजय** के **सर्पयज्ञ** आदि की कथाएँ विस्तार से सुनाईं।

सर्पयज्ञ में पधारे **महर्षि वेदव्यास** से **जनमेजय** ने कौरव-पाण्डवों का चरित्र सुनना चाहा तो उनकी आज्ञा से **वैशम्पायन** ने पौरवनन्दन राजा **उपरिचर** (वसु), **अद्रिका, सत्यवती, पराशर, कृष्णद्वैपायन** (वेदव्यास) **शन्तनु, भीष्म, गंगा, विदुर, कर्ण, श्रीकृष्ण, सात्यकि, कृतवर्मा, द्रोण, अश्वत्थामा, धृष्टद्युम्न, दौपदी, सुबल, शकुनि, गान्धारी, धृतराष्ट्र, पाण्डु, दुर्योधन** आदि के अतिरिक्त देवों, असुरों, अप्सराओं, राक्षसों, पशुओं, पक्षियों, वृक्षों इत्यादि की उत्पत्ति से सम्बन्धित विस्तृत वर्णन करके कौरवों का चरित्र सुनाते हुए कहा -

राजा **दुष्यन्त** कौरवों का आदि पुरुष था। एक बार वह सेना सहित वन में गया और अपने सभी साथियों को छोड़कर वहाँ स्थित कश्यप के पुत्र ऋषि **कण्व** की अनुपस्थिति में उनके मनोहर आश्रम में प्रविष्ट हो **शकुन्तला** से उसका परिचय पूछा तो उसने अपने आपको **कण्व** की पुत्री बताया। जब **दुष्यन्त** ने यह कहा कि **कण्व** ऋषि तो उर्ध्वरेता हैं, तुम उनकी पुत्री कैसे हुई, तब **शकुन्तला** बोली - एक ऋषि ने मेरा जीवन वृत्तान्त पूछा तो मेरे पिता ने उन्हें बताया - तपस्वी **विश्वामित्र** के पास **इन्द्र** द्वारा भेजी गई अप्सरा **मेनका** के गर्भ से यह कन्या उत्पन्न हुई। वह इसे **मालिनी नदी** के तट पर छोड़कर **इन्द्र** की सभा में चली गई। उस समय स्नानार्थ गये हुए मैंने इसे पक्षियों के संरक्षण में देखा और आश्रम में लाकर कन्या की भाँति पाला। यह सुनकर **दुष्यन्त** ने शकुन्तला को राजपुत्री माना, और उसके साथ गन्धर्व **विवाह** कर लिया। फिर यह कहकर वह अपनी राजधानी को लौट गया कि तुम्हें चतुरंगिणी सेना के साथ ले जाऊँगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ समय के पश्चात् ऋषि **कण्व** आश्रम में लौटे, और राजा **दुष्यन्त** से **शकुन्तला** के मिलन की जानकारी प्राप्त कर प्रसन्न हुए । समय व्यतीत होने पर **शकुन्तला** ने एक वीर पुत्र को जन्म दिया। जिसने ६ वर्ष की आयु में सिंह, शूकर, भैंसे, हाथी आदि प्राणियों को अपने वश में कर लिया, अतः मुनियों ने उसका "**सर्वदमन**" नाम रखा । उस कुमार का असाधारण बल देखकर महर्षि **कण्व** ने उसे **शकुन्तला** और अपने शिष्यों के साथ **हस्तिनापुर** भिजवा दिया । वहाँ राज मन्दिर में प्रविष्ट होकर **शकुन्तला** ने राजा **दुष्यन्त** से कहा - आप अपने इस पुत्र को यौवराज्य पद पर अभिषिक्त कीजिये, तो जानते हुए भी अनजान बनकर **दुष्यन्त** बोला - मैं तुम्हें नहीं जानता तुम कौन हो ?

यह सुनकर क्रोध से युक्त हो के **शकुन्तला** कहने लगी - महाराज ! आप सब कुछ जानकर भी यह क्यों कहते हैं कि "मैं तुम्हें नहीं जानता" । क्या आप यह नहीं जानते कि परमेश्वर सबके हृदय में सदा सजग है ? पुत्र पिता से लिपट जाता है तब उससे और अधिक सुख क्या होगा ?

हे राजन् ! आप अपने पुत्र का अपमान क्यों कर रहे हैं ? उस समय हुई यह देववाणी सुनकर कि "**शकुन्तला** ने जो कहा वह सत्य है । हे पौरव ! तुमको इस पुत्र का भरण करना होगा, यह '**भरत**' नाम से प्रसिद्ध हो ।" **दुष्यन्त** ने मन्त्रियों से कहा - यदि **शकुन्तला** के कहने पर ही मैं अपने पुत्र को स्वीकार कर लेता तो प्रजा इसकी शुद्धता पर शंका करती । फिर दुष्यन्त ने अपने पुत्र को गले लगाया, और शकुन्तला से कहा - हे देवि ! लोकापवाद को दूर करने के लिये मैंने तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार किया । तत्पश्चात् अपने पिता से '**भरत**' नाम तथा युवराज पद प्राप्त कर **दुष्यन्त** पुत्र सार्वभौम चक्रवर्ती सम्राट बना, और ऋषि **कण्व** से **गोवितत** नामक **अश्वमेध** यज्ञ कराया । इस **भरत** से यह भरतवंश और **भारत** नाम प्रसिद्ध हुआ ।

तत्पश्चात् **राजा जनमेजय** के समक्ष मुनि **वैशम्पायन** ने प्रजापति **दक्ष**, **वैवस्वतमनु**, **भरत**, **कुरु**, **पुरु**, **यादव** आदि वंशों का वर्णन करके कहा - **भरत** ने अपने पुत्र **भुमन्यू** को यौवराज्य पद दिया । फिर **भुमन्यु** के पुत्र **वितथ** के वंश में उत्पन्न हुए राजा **प्रतीप** ने वृद्धावस्था में **शन्तनु** नामक पुत्र प्राप्त किया । **शन्तनु** को पहले गंगा के गर्भ से '**देवव्रत**' (भीष्म) नामक पुत्र की प्राप्ति हुई । जिसने अपने पिता का पुनर्विवाह **सत्यवती** से कराने हेतु आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा की । फिर लगभग ४०वर्ष बाद **शन्तनु** ने दासराज की पुत्री **सत्यवती** से विवाह करके **चित्रांगद** और **विचित्रवीर्य** नामक पुत्र उत्पन्न किये ।

शन्तनु के साथ विवाह होने से पूर्व कुमारी **सत्यवती** के गर्भ से ऋषि **पराशर** ने **कृष्णद्वैपायन** (वेदव्यास) को उत्पन्न कर दिया था ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यवती का ज्येष्ठ पुत्र **चित्रांगद**, गन्धर्वराज **चित्रांगद** के साथ युद्ध करते हुए कुरुक्षेत्र में मारा गया। तब **भीष्म** ने **विचित्रवीर्य** को कुरु राज्य के सिंहासन पर अभिषिक्त किया। फिर माता **सत्यवती** से आज्ञा लेकर भीष्म **वाराणसीपुरी** गया और वहाँ से उसने **काशीराज** की तीन कन्याओं **अम्बा, अम्बिका** और **अम्बालिका** को बलात् हस्तिनापुर लाकर **विचित्रवीर्य** के साथ उनका विवाह करना चाहा। तब **अम्बा** के यह कहने पर कि "मैं **सौभराज्य** अधीश **शाल्व** को मन में अपना पति बना चुकी हूँ" उसे **शाल्व** के पास भेज दिया, और **अम्बिका, अम्बालिका** का विवाह **विचित्रवीर्य** के साथ कर दिया। विवाह के पश्चात् कामानुवर्ती **विचित्रवीर्य** उन दोनों नारियों के साथ लगातार सात वर्ष तक विहार कर क्षय रोग से ग्रसित हो मौत के मुख में चला गया।

पुत्र शोक से दुःखी **सत्यवती** ने कुरुवंश की वृद्धि के लिये दोनों पुत्रवधुओं से पुत्र उत्पन्न करने हेतु **भीष्म** को कहा तो उसने अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण कराके असमर्थता व्यक्त की। तब **सत्यवती** ने अपने पूर्व पुत्र **कृष्णद्वैपायन** (वेदव्यास) को बुलवाया।

कृष्ण द्वैपायन ने अपनी माता **सत्यवती** की आज्ञा से **अम्बिका** के साथ सहवास किया, उससे अन्धा पुत्र, (धृतराष्ट्र) उत्पन्न हुआ। फिर दूसरी बार **अम्बालिका** से समागम किया तो उसने पाण्डुवर्ण एक शिशु को जन्म दिया। इन दोनों सन्तानों से असन्तुष्ट **सत्यवती** ने तीसरी बार कृष्णद्वैपायन को बुलाकर **अम्बिका** के साथ पुनःनियोग करवाना चाहा, किन्तु भयभीत हुई **अम्बिका** ने **कृष्णद्वैपायन** के पास अपनी **दासी** को भेजा, उससे **विदुर** ने जन्म लिया। कालान्तर में इन तीनों के वयस्क होने पर **भीष्म** ने **पाण्डु** को **हस्तिनापुर** का राज्याधिकारी बनाकर **गान्धार देश** के राजा **सुबल** की पुत्री (शकुनि की बहिन) **गान्धारी** के साथ **धृतराष्ट्र** का, **शूर** की पुत्री (वसुदेव की बहिन) **पृथा** जो **कुंन्तिभोज** को गोद दी गई और **कुन्ती** के नाम से जानी जाने लगी, का तथा **मद्रराज** की पुत्री **माद्री** का **पाण्डु** के साथ एवं **देवक** की पुत्री का **विदुर** के साथ विवाह करवा दिया। अपने विवाह से पूर्व कुमारी **कुन्ती** ने **सूर्यदेव** से एक पुत्र उत्पन्न कर बन्धुओं के डर से उसे जल में बहा दिया। तब सूत पुत्र **राधापति** ने अपनी स्त्री की सहमति से उस बालक को लाकर पाला पोषा और उसका नाम **वसुषेण** रखा, जो कालान्तर में **कर्ण** के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

विदुर ने अपनी पत्नी से अनेक पुत्र, और **धृतराष्ट्र** ने **गान्धारी** से **दुर्योधन, दुःशासन, दुःसह, दुःशल, जलसन्ध, सम, सह** आदि सौ पुत्रों एवं **दुःशला** नामकी एक कन्या को जन्म दिया, तथा अपनी परिचारिका **वैश्य युवती** के गर्भ से युयुत्सु नामक पुत्र को उत्पन्न किया। फिर वे पुत्र बड़े हुए तब उनका **धृतराष्ट्र**

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने योग्य कन्याओं के साथ विवाह कर दिया, और **दुःशला** सिन्धुराज **जयद्रथ** को सम्प्रदान की ।

किन्दम मुनि के शाप से **हस्तिनापुर** का राज्य त्याग कर अपनी दोनों स्त्रियों के साथ बन में रह रहे **पाण्डु** ने **कुन्ती** से कहा - मैं सन्तान उत्पन्न करने योग्य नहीं हूँ । तब अपने पति की आज्ञा से कुन्ती ने क्रमशः **धर्म**, **पवन**, **इन्द्र** के साथ नियोग करके **युधिष्ठिर**, **भीम**, **अर्जुन** को जन्म दिया और **माद्री** ने दो **अश्विनी कुमारों** से जुड़वें पुत्र **नकुल** तथा **सहदेव** को उत्पन्न किया । **दुर्योधन** और **भीम** का जन्म एक ही दिन हुआ ।

वन में रह रहे **पाण्डु** एक दिन कामासक्त हो **माद्री** के साथ सहवास कर तत्काल मृत्यु को प्राप्त हो गये । तब **माद्री** का विलाप सुनकर वहाँ **कुन्ती** गयी, और अपने पति को मृत देखकर बहुत दुःखी हुई । कुछ समय के पश्चात् पति वियोग से सन्तप्त **माद्री** ने भी अपने प्राण त्याग दिये, तो उस वन के तपस्वी मुनि **कुन्ती** एवं **पाँचों** पाण्डु पुत्रों के साथ **पाण्डु** तथा **माद्री** का मृतदेह लेकर सत्रहवें दिन **हस्तिनापुर** पहुँचे, और उन्होंने **भीष्म**, **धृतराष्ट्र**, **विदुर**, **दुर्योधन** आदि को पाण्डु पुत्रों का परिचय देकर घटी घटना से अवगत किया । फिर **धृतराष्ट्र** के आदेशानुसार **विदुर** ने **पाण्डु** और **माद्री** का एक ही चिता में अन्त्येष्टि संस्कार करवा दिया । तत्पश्चात् **वेदव्यास** की सम्मति से **सत्यवती** अपनी दोनों पुत्रवधुओं **अम्बिका** तथा **अम्बालिका** को संग लेकर वन नें चली गई । वहाँ इन तीनों ने कठोर तप करके अपनी देहत्याग दी ।

पाँचों भाई **पाण्डव** पितृगृह में रहते हुए **दुर्योधनादि** के साथ खेलने लगे । खेल के समय अति बलवान **भीम धृतराष्ट्र** के पुत्रों को बहुत पीटता और सताता था । इसलिये **दुर्योधन** ने उसे मारने हेतु **गंगा** के किनारे **प्रमाणकोटि** स्थान पर विषयुक्त भोजन खिलाकर जल में फेंक दिया । जब होश आने पर **भीम** जल से बाहर निकल कर वहाँ सोया तब उसे साँपों ने काटा, किन्तु वह सर्प विष से प्रभावित नहीं हुआ तो **दुर्योधन** ने पुनः विष मिश्रित भोजन कराया उसे भी **भीम** ने पचा लिया, और वह बच गया ।

जनमेजय के पूछने पर ऋषि **वैशम्पायन** ने बताया - **गौतम मुनि** के पुत्र **कृप** तथा पुत्री **कृपी** का लालन पालन राजा **शन्तनु** ने किया । **गौतम** ने अपने पुत्र **कृप** को शस्त्र विद्या सिखाकर स्वल्पकाल में ही आचार्य बना दिया ।

ऋषि **भरद्वाज** के पुत्र **द्रोण** और राजा **पृषत्** के पुत्र **द्रुपद** साथ साथ खेलते और पढ़ते थे । कालान्तर में **द्रुपद** (अपने पिता की मृत्यु के पश्चात्) **पाञ्चाल** देश के राजा हुए, और **द्रोण** का विवाह **कृपी** के संग हुआ, उसने **अश्वत्थामा** नामक पुत्र उत्पन्न किया । जब जमदग्न्य **परशुराम** से अस्त्र-शस्त्र का प्रशिक्षण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त कर **द्रोण** धन की इच्छा से अपने मित्र राजा **द्रुपद** के पास गये, तब उसने यह कहकर कि "भूपालों की निर्धनों से मित्रता नहीं होती" **द्रोण** का तिरस्कार किया, तो वे **पाञ्चाल राज्य** की पराजय का उपाय सोचकर **हस्तिनापुर** चले गये। वहाँ एक दिन खेल रहे पाण्डु तथा धृतराष्ट्र के पुत्रों की गेंद कुएँ में जा गिरी, उसे **द्रोण** ने तीर पर तीर मार-मार कर कुएँ से बाहर निकाल दिया । तब उन बालकों से यह जानकारी प्राप्त कर **भीष्म** ने **द्रोण** को **कौरवों** और **पाण्डवों** के लिये गुरु रूप में स्वीकार कर लिया ।

अपने साथ किये गये **द्रुपद** के दुव्यर्वहार की जानकारी **भीष्म** को देकर **द्रोणाचार्य** ने शिष्यों से कहा तुम प्रतिज्ञा करो जब अस्त्रविद्या में दक्ष बन जाओगे तब मेरी इच्छा पूरी करोगे । उस समय **अर्जुन** ने **द्रोणाचार्य** की सब कामनाएँ पूर्ण करने की प्रतिज्ञा की । तत्पश्चात् वृष्णिवंशी, अन्धकवंशी, अनेक देशों के राजकुमार और सूत पुत्र **कर्ण** भी **द्रोणाचार्य** से अस्त्रविद्या प्राप्त करने लगे ।

गुरु **द्रोणाचार्य** ने अपने सभी शिष्यों में सर्वाधिक सुयोग्य अर्जुन को मानकर उसे अन्धेरे में आहार न देने के लिये रसोइये को कहा । किन्तु एक दिन रात में हवा से दीपक बुझ जाने पर अन्धेरे में भोजन करते हुए **अर्जुन** को यह विश्वास हो गया कि शस्त्राभ्यास तो रात में भी किया जा सकता है । तदनुसार रात में अभ्यास रत **अर्जुन** के बाणों की आहट सुनकर उससे **द्रोणाचार्य** बोले तुम्हारे जैसा धनुर्धारी कोई दूसरा नहीं होगा ।

हिरण्यधनु निषाद राजा के पुत्र **एकलव्य** को आचार्य **द्रोण** ने शिष्य रूप में स्वीकार नहीं किया, तब भी उसने **द्रोणाचार्य** को अपना गुरु मान कर पूर्ण परिश्रम से धनुर्विद्या में निपुणता प्राप्त कर ली । किसी समय द्रोणाचार्य की आज्ञा से कौरव, पाण्डव वन में गये तब एक व्यक्ति कुत्ते को लेकर उनके साथ चला । वह कुत्ता घूमता हुआ **एकलव्य** के पास पहुँच कर भोंकने लगा । तब **एकलव्य** ने सात वाणों से उसका मुँह भर दिया । इस घटना की जानकारी देकर **अर्जुन** आचार्य **द्रोण** से बोला - आपने तो कहा था कि मेरा कोई शिष्य तुम से श्रेष्ठ नहीं होगा । तब आचार्य **द्रोण** ने वन में जाकर **एकलव्य** से गुरु दक्षिणा में उसके दाहिने हाथ का अँगुठा माँगा तो उसने काट कर दे दिया । इससे **अर्जुन** की मनःपीड़ा जाती रही ।

द्रोणाचार्य ने अपने शिष्यों की परीक्षा लेने हेतु बनावटी **गिद्ध पक्षी** एक वृक्ष पर रखवा के कहा - तुम लोग धनुष बाण लेकर गिद्ध पर निशाना लगाओ। फिर युधिष्ठिर, दुर्योधनादि से पूछा कि तुम इस **गिद्ध** को वृक्ष को, मुझको अथवा अपने भाइयों को भी देखंते हो या नहीं ? तो उन्होंने कहा हम सभी को देखते हैं,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब आचार्य **द्रोण** ने उन सब को वहाँ से हटा दिया । किन्तु अर्जुन ने यह कह कर "कि मैं केवल पक्षी का सिर देखता हूँ" बाण चलाया और पक्षी का सिर काटकर नीचे गिरा दिया ।

एक दिन गंगा में स्नानार्थ उतरे **द्रोणाचार्य** की मगर ने जाँघ पकड़ली । तब उन्होंने अपनी रक्षा के लिये शिष्यों से कहा । उस समय **अर्जुन** ने तत्काल पाँच बाण चलाकर उस जलचर को मार डाला, अन्य शिष्य वहाँ मूढ़वत् खड़े रहे । **अर्जुन** के उस कार्य से प्रसन्न होकर आचार्य **द्रोण** ने उसे **ब्रह्मशिर** नामक अस्त्र दिया ।

राजा **धृतराष्ट्र** से स्वीकृति प्राप्तकर **द्रोणाचार्य** ने **भीष्म, कृपाचार्य,** मन्त्रियों सहित **धृतराष्ट्र, गान्धारी, कुन्ती,** राजरानियों, दासियों एवं नगरवासियों के समक्ष प्रशिक्षित **कौरव, पाण्डवों** आदि अपने शिष्यों से शस्त्रविद्या का प्रदर्शन करवाया । उस समय राजकुमारों ने विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों का कौशल दिखाया । जब **दुर्योधन** और **भीम** एक साथ अखाड़ें में उतरे तब रंगमञ्च क्रोध स्थान बन जाने के भय से **द्रोणाचार्य** ने अपने पुत्र **अश्वत्थामा** को कहकर उन्हें दूर-दूर करवा दिया । तत्पश्चात् आचार्य **द्रोण** के आदेशानुसार **अर्जुन** ने धनुर्विद्या का प्रदर्शन किया, उससे दर्शकों को बहुत आश्चर्य हुआ ।

(उस समय **धृतराष्ट्र** को **विदुर** ने एवं **गान्धारी** को **कुन्ती** ने वहाँ हो रहे प्रदर्शनों की जानकारी दी)

उस अखाड़े में **अर्जुन** ने जो - जो कर्म किये वे सब **कर्ण** ने करके दिखादिये । फिर उसने **दुर्योधन** से कहा - मैं तुम से मित्रता का प्रार्थी हूँ, और **अर्जुन** से द्वन्द्व युद्ध करना चाहता हूँ । जब द्वन्द्व युद्ध के लिये **अर्जुन** और **कर्ण** आमने सामने खड़े हो गये तब **कृपाचार्य** ने अर्जुन का वंश परिचय देकर **कर्ण** से उसका कुल बताने को कहा, तो **दुर्योधन** ने मैत्रीभाव से **कर्ण** को **अंगराज्य** में अभिषिक्त करा दिया । उस समय सारथि **अधिरथ** ने वहाँ आकर **कर्ण** को पुत्र कहके पुकारा । तब हँसते हुए **भीम** ने **कर्ण** से कहा -जाओ कहीं घोड़े चलाओ, तुम रणभूमि में **अर्जुन** से मारे जाने योग्य नहीं हो । **भीम** के इस कथन पर **दुर्योधन** को आपत्ति हुई । तब तक सूर्यास्त हो जाने से वह युद्ध टल गया ।

एक दिन आचार्य **द्रोण** ने अपने शिष्यों से राजा **द्रुपद** को जीवित पकड़ कर लाने की गुरु दक्षिणा माँगी तो वे उसे ले आये । तब **द्रोणाचार्य** राजा **द्रुपद** को अपने वश में करके बोले -तुमने कहां था कोई राज्य हीन व्यक्ति किसी राजा का मित्र नहीं हो सकता, इसीलिये मैंने यह प्रयास किया है । अब तुम **भागीरथी** के दक्षिण किनारे पर राज्य करोगे और उत्तर किनारे का राज्य मेरे अधिकार में होगा । द्रुपद के यह कहने पर कि "मैं सदा आपकी प्रीति चाहता हूँ", **द्रोणाचार्य** ने उसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्धन मुक्त कर दिया । अर्जुन के पराक्रम से **द्रोणाचार्य** को **अहिच्छत्र** नामक राज्य प्राप्त हो गया ।

भीम को अति बलवान और **अर्जुन** को शस्त्र विद्या में निपुण देखकर दुर्योधन **कर्ण** तथा **शकुनि** पाण्डवों को मारने की चेष्टा करने लगे । यह सब कुछ जानते हुए भी **पाण्डव विदुर** की सम्मति से शान्त रहे । जब पुरवासियों से **दुर्योधन** ने यह सुना कि "हम **हस्तिनापुर** के राज्य पर **युधिष्ठिर** को अभिषिक्त करेंगे" तो उसने अपने पिता **धृतराष्ट्र** से कहकर पाण्डवों को उनकी माता के साथ **वारणावत** भिजवा दिया, और पुरोचन से कहा तुम **वारणावत** जाकर जल्दी आग पकड़नेवाले पदार्थों से वहाँ एक भवन बनवा के उसमें पाण्डवों को ठहरा दो । फिर अवसर देखकर सोते हुए पाण्डवों को जला डालो ।

पाण्डवों को **हस्तिनापुर** से निकाले जाने पर नगरवासियों को आपत्ति हुई, किन्तु वे कुछ कर नहीं सके । **वारणावत** के लिये जाते हुए पाण्डवों के साथ कुछ दूर **विदुर** चले । उस समय उन्होंने **युधिष्ठिर** को म्लेच्छ भाषा में बताया - बिना शस्त्र के शरीर को नष्ट कर देने वाले उपाय जाननेवालों का शत्रु कुछ नहीं बिगाड़ सकता । वन में आग लगने पर बिल में रहने वाले चूहे नहीं जलते । नेत्रहीन पथ को नहीं देख सकते । घूमने से मृगों का और नक्षत्रों से दिशाओं का ज्ञान होता है । संयमी व्यक्ति शत्रुओं से पीसे नहीं जाते । **विदुर** के इन उपदेशों का भाव **युधिष्ठिर** ने **कुन्ती** को समझा दिया ।

वारणावत पहुँचकर वहाँ के निवासियों से **पाण्डव** सम्मानित हुए । तत्पश्चात् वे **पुरोचन** द्वारा निर्मित कराये गये भवन में गये । तब **युधिष्ठिर भीम** से बोले - इस घर में शीघ्र ही आग पकड़ने वाले पदार्थ लगाये गये हैं । **पुरोचन** हमें जलाना चाहता है, **विदुर** ने सावधान कर दिया था । उस समय **भीम** के यह कहने पर कि "हम अन्यत्र जा बसें" **युधिष्ठिर** ने बताया ऐसा करने पर **दुर्योधन** अपने दूतों से हमें मरवा देगा, हम सावधानी पूर्वक यहीं रहेंगे ।

कुछ दिनों बाद **विदुर** द्वारा भेजे गये मिट्टी खोदने में दक्ष एक खनिक ने **युधिष्ठिर** से मिलकर गुप्त रूप से वहाँ **सुरंग** बना दी । तब **कुन्ती** ने ब्राह्मण भोजन का आयोजन किया । उस रात संयोग से एक **बहेलिन** अपने पाँच पुत्रों के साथ वहाँ आई और भोजन करके वहीं सोगई । वह उपयुक्त अवसर देखकर **भीम** ने उस घर में आग लगादी, और माता **कुन्ती** तथा अपने भाइयों को साथ लेकर **सुरंग** से सुरक्षित बाहर निकलने में सफलता प्राप्त कर ली । जलते हुए उस **लाक्षागृह** को देखकर नगरवासियों ने कहा पापात्मा **पुरोचन** ने निर्दोष पाण्डवों को जला दिया और स्वयं भी जल मरा । पाण्डवों को जिन्दा जलाने के षड्यन्त्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उन्होंने **धृतराष्ट्र** की सम्मति के साथ **दुर्योधन** का हाथ बताया । **वारणावत** वासियों से इस दुर्घटना की सूचना प्राप्त कर धृतराष्ट्र दुःखी हुए ।

सुरंग द्वार से जंगल में पहुँच कर **दुर्योधन** से भयभीत पाण्डव माता **कुन्ती** सहित दक्षिण की ओर शीघ्रता से आगे बढ़े, और प्यास से व्याकुल होकर एक वटवृक्ष की छाया में बैठ गंये । फिर **भीम** एक जलाशय से जल लेकर आया उस समय अत्यधिक थकान के कारण माता **कुन्ती** सहित अपने भाइयों को सोता देखकर उन्हें जगाया नहीं ।

जहाँ **पाण्डव** सो रहे थे वहाँ से कुछ ही दूरी पर **हिडिम्ब** नाक नरभक्षी एक राक्षस रहता था । उसने अपनी बहिन **हिडिम्बा** से कहा तुम पता लगाओ ये कौन सो रहे हैं, मैं इनका मांस खाऊँगा । तब पति की कामना रखनेवाली **हिडिम्बा** पाण्डवों के पास पहुँचकर **भीम** से बोली - पापात्मा मेरा भाई **हिडिम्ब** तुम लोगों का मांस खाना चाहता है, उसने इसीलिये मुझे यहाँ भेजा है । तुम मुझे पत्नी के रूप में स्वीकार करो, मेरे साथ चलो और अपार आनन्द लूटो, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी । यह सुनकर **भीम** ने **हिडिम्बा** से कहा - मैं अपने छोटे-बड़े भाइयों तथा अपनी माता को सुख से सोते हुए छोड़कर तुम्हारे साथ नहीं चल सकता और न इन्हें जगा सकता । तुम जाओ और अपने भाई को मेरे पास भेज दो ।

अपनी बहिन **हिडिम्बा** के लौटने की देर तक प्रतीक्षा कर **हिडिम्ब** पाण्डवों के पास गया । फिर **हिडिम्बा** को डाँटकर **भीम** से युद्ध करने लगा । उस कोलाहल को सुनकर **पाण्डव** जाग गये । तब **हिडिम्बा** ने **कुन्ती** से कहा - मेरा भाई **हिडिम्ब** तुम लोगों का मांस खाना चाहता है । कुछ देर बाद **भीम** ने उस राक्षस को मार डाला, तो **हिडिम्बा** बोली - मैंने पति के रूप में **भीम** का वरण किया है, अतः मुझे इन से संयुक्त किया जाय । फिर **युधिष्ठिर** की सहमति से **भीम** ने **हिडिम्बा** को अपना लिया और उस से एक पुत्र उत्पन्न करके उसका नाम **'घटोत्कच'** रखा । तत्पश्चात् तपस्वी वेश धारण कर वन में विचरते हुए पाण्डवों को **महर्षि वेदव्यास** मिले । वे उन्हें **एकचक्रा नगरी** ले जाकर वहाँ अपने पुनः लौटने का आश्वासन दे के चले गये ।

एकचक्रा नगरी के एक ब्राह्मण परिवार में रहते हुए **पाण्डव** भिक्षावृत्ति से अपना निर्वाह करने लगे । वहाँ एक रात में ब्राह्मण और ब्राह्मणी का रुदन सुनकर कुन्ती ने उनके दुःख का कारण पूछा, तो उन्होंने बताया - इस नगरी के निकट मनुष्य भक्षी एक **बक** नामक राक्षस रहता है । वह अन्य आततायियों से प्रजा की रक्षा करने में संलग्न है । उसे वेतन के रूप में प्रत्येक गृहस्थ को अपनी-अपनी बारी से एक गाड़ी अन्न, दो भैंसे और एक मनुष्य नित्य देना पड़ता है । यहाँ का दुर्बल राजा प्रजा की रक्षा करने योग्य नहीं है । आज हमारी बारी आयी है । तब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुन्ती ने कहा है ब्रह्मन् ! दुःख मत करो । आज वहाँ बलि लेकर मेरा पुत्र जायेगा । यह बहुत बलवान है, अपनी रक्षा कर लेगा । इसने बहुत राक्षस मारे हैं, किन्तु यह बात किसी को कहना मत । फिर **कुन्ती** की आज्ञा से भोजन की सामग्री लेकर **भीम** उस राक्षस के पास गया, और उसे मारकर नगर के द्वार पर ला पटका । तत्पश्चात् वहाँ के राजा को जो कुछ हुआ वह सब बता दिया । प्रातःकाल नगरवासियों ने **बकासुर** का शव देखकर अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की ।

कुछ दिन बाद उस बाह्मण परिवार में एक **ब्राह्मण** आया । उसने पाण्डवों को **द्रुपद** के पुत्र **धृष्टद्युम्न** और पुत्री **कृष्णा** (द्रौपदी) की उत्पत्ति से सम्बन्धित कथा सुनाई । तत्पश्चात् वहाँ छिपकर रह रहे पाण्डवों से एक दिन **वेदव्यास** आकर मिले, और उन्होंने पाण्डवों को **पाञ्चाल** देश जाने की सम्मति दी । इससे पूर्व **कुन्ती** ने भी यही कामना व्यक्त की थी । अतः वे **पाञ्चाल देश** के लिये चल पड़े और **गंगा** किनारे जा पहुँचे, तो उन्हें देखकर जल में स्त्रियों के साथ क्रीड़ा कर रहे, एक **अंगारपर्ण** नामक **गन्धर्वराज** को आपत्ति हुई । उस समय **अर्जुन** बोला - समुद्र, हिमालय का पार्श्व और गंगा पर किसी का अधिकार नहीं है । फिर युद्ध में परास्त करके उस गन्धर्व को **अर्जुन** अपने भाइयों के पास ले आया । तब उसकी पत्नी **कुम्भीनसी** ने **युधिष्ठिर** से प्रार्थना करके अपने पति को छुड़ा लिया तो उसने पाण्डवों से मित्रता स्थापित करके कहा - तुम लोगों को अपने साथ पुरोहित रखना चाहिये । फिर अर्जुन के पूछने पर राजा **संवरण, तपती, वसिष्ठमुनि, राजाविश्वामित्र,** कामधेनु **नन्दिनी,** राजा **कल्माषपाद,** वसिष्ठ के पुत्र **शक्ति** आदि की कथाएँ सुनाकर **उत्कोच** नामक तीर्थ में रह रहे **देवल** के छोटे भाई **धौम्य** ऋषि को पुरोहित बनाने की सम्मति दी, तो पाण्डवों ने **उत्कोच** तीर्थ में जाकर **धौम्य** का पुरोहित पद के लिये वरण किया ।

मार्ग में चलते हुए पाण्डव ब्राह्मणों से द्रौपदी के स्वयंवर की जानकारी प्राप्त कर **पाञ्चाल देश** पहुँचे, और वहाँ एक कुम्हार के घर में ठहरे । वे ब्राह्मणवेश में भिक्षावृत्ति से अपना निर्वाह करते थे, इसलिये उन्हें कोई पहिचान नहीं पाया ।

राजा **द्रुपद** ने पाण्डवों को ढूढ़ने की इच्छा से एक ऐसा दृढ़ धनुष बनवाया जिसे **अर्जुन** के सिवाय कोई झुका न सके, और आकाश में **कृत्रिम यन्त्र** बनवाकर उस पर सोने का **लक्ष्य** जुड़वाया फिर यह घोषणा करवादी कि यह लक्ष्य वेध करने वाला मेरी कन्या को प्राप्त करेगा । उस स्वयंवर को देखने ऋषि मुनि, ब्राह्मण, **कर्ण** तथा दुर्योधनादि कौरवों सहित सब राजा वहाँ आये और सभी ने अपना स्थान ग्रहण किया । पाण्डव ब्राह्मण समुदाय में जा बैठे ।

जब **द्रौपदी** वरमाला लेकर वहाँ उपस्थित हुई तब **धृष्टद्युम्न** सभी राजाओं को सम्बोधित करके बोले - आकाश में स्थित **लक्ष्य** दीख पड़ता है, इसे पाँच

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाणों से विद्ध कीजिये । जो यह कार्य करके दिखायेगा, मेरी बहिन कृष्णा उसकी भार्या होगी । ''उस समय ब्राह्मणों के साथ बैठे पाण्डवों को **श्रीकृष्ण** और **बलराम** ने पहिचान लिया, अन्य कोई नहीं जान पाये ।

द्रौपदी को पाने की इच्छा से वहाँ आये राजा एक-एक करके अपना विक्रम प्रकट करने लगे, किन्तु उनमें से कोई भी सफल काम नहीं हो पाया । तब **अर्जुन** उठा तो ब्राह्मण आपस में कहने लगे इसे रोको, यह हमारी हँसी करायेगा । इतने में **अर्जुन** ने उस **लक्ष्य** को पाँच बाणों से वेध दिया, तो वह **यन्त्र** के छिद्र से धरती पर आ गिरा । यह देखकर राजा **द्रुपद** और ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हुए । किन्तु जो लक्ष्य नहीं वेध सके वे हाय-हाय करने लगे । वहाँ भारी कोलाहल होने लगा तो **युधिष्ठिर, नकुल** तथा **सहदेव** को लेकर अपने डेरे पर चले गये ।

''राजा **द्रुपद** अपनी कन्या ब्राह्मण को दे रहा है'' यह कह कर कुपित हुए भूपालों ने शस्त्र उठा लिये । तब **अर्जुन** ने **कर्ण** को एवं **भीम** ने मद्रराज शल्य को अन्य राजाओं सहित परास्त कर दिया । उस समय **श्रीकृष्ण** ने यह कह के कि ''इस ब्राह्मण ने धर्म के अनुसार **द्रौपदी** को प्राप्त किया है'' राजाओं को युद्ध से निवृत्त कर दिया । तत्पश्चात् **अर्जुन** और **भीम द्रौपदी** को साथ लेकर कुम्हार के घर पर पहुँचे और माता **कुन्ती** से बोले '' माँ ! आज यह **भिक्षा** मिली है ।'' उस समय कुटी में बैठी **कुन्ती** ने कह दिया - ''तुम सब मिलकर भोगो.'' फिर **द्रौपदी** को देखकर बोली - मैंने यह अनुचित बात कह दी ।

तदनन्तर **युधिष्ठिर** से यह सुनकर कि ''**द्रौपदी** के साथ विवाह करो,'' **अर्जुन** बोले पहला स्थान आपका, दूसरा **भीम** का, फिर मेरा है । तब **युधिष्ठिर** ने कहा - **द्रौपदी** हम सब की भार्या होगी । उस समय वहाँ **श्रीकृष्ण, बलराम** आये और पाण्डवों का कुशल क्षेम पूछ कर चले गये । पाण्डवों के पीछे-पीछे छिपकर कुम्हार के घर पर गये **धृष्टद्युम्न** ने सारी जानकारी प्राप्त कर अपने पिता को बताया ''**कृष्णा** को लेजानेवाले **पाण्डव** हैं ।''

राजा **द्रुपद** के भेजे हुए पुरोहित ने पाण्डवों से उन का परिचय पूछा । उस समय वहाँ एक दूत आया और माता **कुन्ती** तथा **कृष्णा** सहित पाण्डवों को राजभवन में ले गया । तब राजा **द्रुपद** ने उन सबका सम्मान कर के **युधिष्ठिर** से **वारणावत** में घटी घटना की विस्तृत जानकारी प्राप्त की, और कहा - **अर्जुन कृष्णा** का पाणिग्रहण करें । जब **युधिष्ठिर** ने कहा कि **द्रौपदी** हम सबकी रानी बनेगी, तो राजा द्रुपद और **धृष्टद्युम्न** ने आपत्ति प्रकट की । किन्तु उस समय वहाँ आये कृष्णद्वैपायन **वेदव्यास** ने **युधिष्ठिर** के कथन को धर्मयुक्त बताया, तब पुरोहित **धौम्य** ने अग्नि में आहुति चढ़ाई और **युधिष्ठिर** को **द्रौपदी** से संयुक्त कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया । फिर कौरव वंश के बढ़ाने वाले राज-पुत्रगणों(पाण्डवों) ने क्रमशः एक-एक दिन उस सुन्दरी का पाणिग्रहण किया । तदनन्तर **श्रीकृष्ण** ने विवाह किये हुए पाण्डवों के लिये आभूषण, अश्वादि भेजे, वे **युधिष्ठिर** ने ले लिये ।

वहाँ आये भूपाल अपने दूतों से यह जानकर कि ''**पाण्डव** जीवित हैं, और **द्रौपदी** ने पाण्डवों को पति रूप में स्वीकार किया है,'' स्वस्थान को लौट गये । **दुर्योधन** उदास और दुःशासन लज्जित होकर वहाँ से **हस्तिनापुर** आये ।

विदुर से यह सुनकर कि ''**पाण्डव** जीवित हैं, ''धृतराष्ट्र ने प्रसन्नता व्यक्त की । किन्तु **कर्ण** और **दुर्योधन** ने जब यह कहा कि पाण्डवों में फूट पड़े हमें ऐसा उपाय करना चाहिये । अथवा राजा **द्रुपद** को युद्ध में परास्त किया जावे तो **धृतराष्ट्र** ने भीष्मादि सम्पूर्ण मन्त्रियों की सम्मति जाननी चाही । उस समय **भीष्म** ने पाण्डवों के साथ युद्ध करना अनुचित बताकर कहा उन्हें आधा राज्य दे दो । **भीष्म** के कथन का **द्रोणाचार्य** तथा **विदुर** ने समर्थन किया तब **धृतराष्ट्र** की आज्ञा से **विदुर** पाण्डवों के पास गये, और उनका कुशलक्षेम पूछकर **द्रुपद** से बोले - आप इन्हें **हस्तिनापुर** भेज देवें । कौरव लोग पाण्डवों को देखने के लिये बहुत व्यग्र हैं । तब **श्रीकृष्ण** की सहमति से राजा **द्रुपद** ने **विदुर** के साथ कुन्ती तथा **द्रौपदी** सहित पाण्डवों को **हस्तिनापुर** भेज दिया । उस समय **भीष्म** की उपस्थिति में **धृतराष्ट्र** ने **युधिष्ठिर** से कहा - तुम्हारा कौरवों के साथ फिर झगड़ा न हो इसलिये तुम **'खाण्डवप्रस्थ'** में जाकर रहो ।

पाण्डवों को राज्य का आधा भाग प्राप्त होने पर उसे सुशोभित बनाने में सहयोग देकर **बलराम** और **श्रीकृष्ण** द्वारिका को चले गये । तब एक समय वहाँ देवर्षि **नारद** आये, और **द्रौपदी** के कारण पाण्डवों में परस्पर बिगाड़ न हो इसके लिये उन्हें कोई नियम बनाने की सम्मति देकर लौट गये । उसके अनुसार पाण्डवों ने यह निश्चित किया कि हम में से एक भाई **द्रौपदी** के पास बैठा होगा तब जो दूसरा भाई उसको देख लेगा, उसे बारह वर्ष ब्रह्मचारी बनकर वन में रहना होगा ।

बहुत दिन बीत जाने पर रोते हुए एक ब्राह्मण से यह सुनकर कि ''लुटेरों ने मेरी गौ चुराली है, अर्जुन ने शस्त्र लाने हेतु घर में प्रवेश किया तो वहाँ **युधिष्ठिर** को **द्रौपदी** के साथ बैठे देखा । इसलिये चोर से प्राप्त की गई गौ ब्राह्मण को देकर निश्चित नियम के अनुसार **अर्जुन** वन में चले गये । वहाँ **कौरव्य** नामक **नागराज** की काम से मोहित कन्या **उलूपी**, **अर्जुन** को एक सुन्दर भवन में ले गयी । तब उसके आग्रह पर उसकी इच्छा पूर्ण कर अर्जुन ने वन में आगे की राह ली ।

वन में भ्रमण करते हुए **अर्जुन मणलूरपुर**, **चित्रवाहन महीपाल** के निकट गये, और उनकी **चित्रांगदा** नामवाली सुन्दर कन्या को देखकर कामासक्त हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये। फिर उससे विवाह करके वहाँ तीन वर्ष रहे । तत्पश्चात् विभिन्न स्थानों पर होते हुए पुनः **मणलूरपुर** जाके **चित्रांगदा** से **बभ्रुवाहन** नामक पुत्र उत्पन्न कर **प्रभास क्षेत्र** में पहुँचे, और वहाँ से **श्रीकृष्ण** के साथ पहले **रैवतक पर्वत** पर, फिर **द्वारिका** गये ।

तदनन्तर कुछ दिनों के बाद **रैवतक पर्वत** पर उत्सव होने लगा । वहाँ **श्रीकृष्ण** के साथ घूमते हुए अर्जुन वसुदेव की कन्या **सुभद्रा** को देखकर काम मोहित हो गये । तब **श्रीकृष्ण** से यह सुनकर कि "तुम मेरी बहिन सुभद्रा को हर लो" अर्जुन ने **इन्द्रप्रस्थ** दूत भेज कर **युधिष्ठिर** की आज्ञा प्राप्त कर ली । फिर **सुभद्रा** को जबर्दस्ती रथ पर चढ़ा के आकाश मार्ग से अपने नगर की ओर गमन किया ।

सैनिकों द्वारा इस घटना की जानकारी प्राप्त कर **द्वारिका** के सभापाल ने भोज वृष्णि और अन्धक लोगों को सूचित किया तो वे युद्ध के लिये तैयार हो गये। तब **श्रीकृष्ण** ने **अर्जुन** के उस कार्य व्यवहार को उचित बता के उन सब को शान्त कर दिया । फिर **द्वारिका** जा के **सुभद्रा** के साथ विवाह कर बारह वर्ष बीत जाने पर **अर्जुन खाण्डवप्रस्थ** गया और **द्रौपदी** से मिला । उस समय **द्रौपदी** बोली - "जहाँ सुभद्रा है, वहाँ जाओ" अब तुम नये प्रेम के जाल में फँसे हो, अतः पहिला प्रेमबन्धन ढीला हो गया होगा ।

द्रौपदी को विलपते देखकर **अर्जुन** ने उसे समझाया और उससे क्षमा माँगी। तब **कृष्णा** ने **सुभद्रा** को गले लगाया। फिर **बलराम, श्रीकृष्ण** आदि **द्वारिका** से **खाण्डवप्रस्थ** आये और **सुभद्रा** को दहेज देकर और तो सभी लौट गये केवल श्री **कृष्ण** वहाँ रहे । तत्पश्चात् **सुभद्रा** ने **अभिमन्यु** को जन्म दिया और **पाञ्चाली** ने पाँच पतियों से पाँच पुत्र प्राप्त किये । **युधिष्ठिर** से **प्रतिबिन्ध्य, भीम** से **सुतसोम, अर्जुन** से **श्रुतकर्मा, नकुल** से **शतानीक** तथा **सहदेव** से **श्रुतसेन**।

कुछ दिन बीतने पर **अर्जुन** तथा **श्रीकृष्ण** ने जाकर जलते हुए खाण्डव वन से भाग रहे प्राणियों को मारा और वन की रक्षा करने साथियों सहित आये **इन्द्र** को परास्त किया । उस समय वहाँ रह रहे शरण में आये **मय** नामक असुर को उन्होंने प्राणदान दिया ।

(आदिपर्व समाप्त हुआ)

प्रस्तुत संस्करण का कम्प्यूटर कार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० कमलेशकुमार वैदिक लेखमाला प्रकाशक न्यास की स्थिरनिधि में योगदान करने वाले यशस्वी दानदाता

५५०००.००	पूज्य स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती, उदयपुर (राज.)
५००००.००	श्रीमती शिवराजवती ओंकारनाथ धर्मार्थ ट्रस्ट, मुम्बई
३१०००.००	श्री इन्द्रजीत जी भाटिया, नासिक द्वारा श्री पूज्य पिता हरीचन्द जी की पुण्य स्मृति में
३००००.००	श्री पुरुपोत्तम अमुलदास रामाणी, चेयरमेन एण्ड मैनेजिंग डायरेक्टर गुजट्रोन अहमदाबाद (गुजरात)
२५०००.००	आर्यसमाज मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)
२१५५१.००	श्रीमती निर्मलादेवी कमलेशकुमार आर्य, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)
२००००.००	श्री आचार्य भद्रसेन धर्मार्थ न्यास अजमेर (राजस्थान)
११११९.००	श्री अशोककुमार चन्द्रलाल अम्ववाणी की पुण्यस्मृति में "अशोक फाउण्डेशन" अहमदावाद
११०००.००	श्रीमती जसुमती बहिन श्री गंगारामभाई भवानी, पनवेल (महाराष्ट्र)
११०००.००	आर्यसमाज गाँधीधाम-कच्छ
११०००.००	श्री वलदेवराज जी चौधरी वेदप्रचार मण्डल आणंद (गुजरात)
१००००.००	श्रीमान सेठ दुल्हनोमल गामनदास डुलानी, कुबेरनगर अहमदावाद
५२५१.००	श्रीमान सेठ मथुराप्रसाद जी ओमप्रकाश जी नवाल राजगढ़ (अजमेर)
५१००.००	श्रीमती अलकादेवी श्रीगणेश जी कुमावत, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)
५१००.००	श्रीमती गुलाबदेवी भगवानदत्त जी शर्मा, गाँधीधाम-कच्छ
५१००.००	श्रीमान सेठ श्यामसुन्दर जी आर्य, दिल्ली
५०००.००	श्री विश्वभूषण जी आर्य, मुम्वई
५०००.००	श्री मोहनदास मेवलदास सुगाणी, कुवेरनगर - अहमदावाद (गुजरात)
५०००.००	श्रीमती वींझीदेवी नेंभराज जादवाणी, ग्वालियर (म.प्र.)
५०००.००	श्रीमती मीरादेवी नन्दलाल जादवाणी एवं परिवार, अहमदावाद
५०००.००	श्री गोरधनभाई हून्दराजमल रामरखियाणी की पुण्यस्मृति में उनके परिवार की ओर से
५०००.००	श्री कर्मचन्द जी की पुण्यस्मृति में श्री रतनलाल जी खूवाणी, सैजपुर वोघा-अहमदावाद
५०००.००	श्री चन्द्रकान्त रामरखियाणी, पूजा फर्निचर, नरोड़ा रोड़, अहमदावाद (गुजरात)
५०००.००	श्री अर्जुनभाई बी. पटेल, श्री विजयलक्ष्मी टिम्बर मार्ट, नरोड़ा रोड़, अहमदाबाद (गुजरात)
५०००.००	श्री हिम्मत जी श्री कस्तूर जी गहलोत, अहमदावाद (गुजरात)
५०००.००	श्री प्रभुलाल जी लढ्ढा, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)
५०००.००	श्री डाह्याभाई श्री करसनभाई पटेल, नवानगर (गुजरात)
५०००.००	अग्रवाल श्री ज्वालाप्रसाद जी श्री घनश्यामदास जी, जलगाँव (महाराष्ट्र)
५०००.००	श्रीमान सेठ द्वारकाप्रसाद जी श्री कोटूमल जी प्रितमाणी, अहमदावाद (गुजरात)
५०००.००	श्रीमती हीराबहिन श्री धनजीभाई वेलाणी, मगोडीलाट (गुजरात)
५०००.००	श्रीमती चन्द्रदेवी श्री भगवानदास रामाणी, थलतेज अहमदावाद (गुजरात)
५०००.००	श्री पुरुषोत्तमभाई श्री वालजीभाई वेलाणी, गाँधीधाम-कच्छ
५०००.००	आर्यसमाज दत्तएपार्टमेण्ट, बड़ौदा (गुजरात)
५०००.००	श्रीमती भारतीदेवी श्री भगवानदेव जी आर्य अहमदावाद (गुजरात)
५०००.००	श्रीमती ईश्वरीवाई श्री जेठानन्द जी भाटिया, कुवेरनगर - अहमदावाद (गुजरात)
५०००.००	श्रीमती रत्नादेवी जी श्री वंशीलाल जी उपाध्याय, रायपुर (मध्यप्रदेश)
५०००.००	डॉ० श्री महेशदत्त जी श्रीवास्तव, टूण्डला (उत्तर प्रदेश)
५०००.००	श्रीमान सेठ चन्दूलाल जी अग्रवाल जयभारत टेक्सटाइल, अहमदावाद
५०००.००	श्री ओमप्रकाश जी आलमपुरिया (आर्य) अहमदावाद (गुजरात)
५०००.००	श्री क्षेमराज जी शर्मा की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र श्री शुद्धवोध जी शर्मा (श्रीगंगानगर)
५०००.००	आर्यसमाज, देवलाली वाजार, कुवेरनगर - अहमदावाद
५०००.००	श्रीमती सुखदेवी हरिशचन्द्र, श्रीवास्तव एवं परिवार, अहमदावाद
५०००.००	श्रीमती रतनवेन श्री विश्राम पटेल सर्वोदय ट्रस्ट घाटकोपर, मुम्वई
५०००.००	श्री लक्ष्मणकुमार जी श्री दिनेशकुमार जी आर्य, सावर (अजमेर)
५०००.००	श्री झाऊलाल जी शर्मा, आर्यसमाज कांकड़वाडी, मुम्वई
५०००.००	मातृश्री धनदेवी केशवराम धर्मार्थ वैदिक ट्रस्ट, भूड बरेली (उ.प्र.) द्वारा श्री गोपालशरण विद्यार्थी
५०००.००	श्रीमती प्रवीणा चन्द्रकान्त आनन्दनगर टीम्बावाड़ी जूनागढ़
५०००.००	श्रीमती चन्द्रभागा पिता श्री महालप्पा जी कटके, गुलवर्गा की पुण्यस्मृति में
५०००.००	श्री आचार्य हरिदेव जी आर्य श्रीमती सुशीला जी आर्या, दिल्ली
५०००.००	श्रीमती अयोध्यावाई धर्मपत्नी श्री प्रह्लादसिंह जी परमार, पोलाय खर्द खाटसर (शाजापुर)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❁ यह पुष्प - आर्यजगत् के गौरव ❁

श्री पूज्य महात्मा विरक्तदेव जी **एवं** **श्री पूज्य आचार्य भद्रसेन जी**



की पावन स्मृति में सादर समर्पित



यदि आप हृदय से यह चाहते हैं कि वैदिकधर्म का विस्तार हो तो-

कृपया वर्त्तमान वातावरण के अनुसार सरल भाषा और मण्डनात्मक शैली में हमारे यहाँ से प्रकाशित **वैदिक लेखमाला के पुष्प** अनेक आर्य बन्धुओं की भाँति आप भी अधिकाधिक संख्या में मँगवाकर अपने क्षेत्र के स्वाध्याय प्रेमियों को अवश्य दीजिये। इन पुष्पों को पढ़कर अनेकानेक व्यक्तियों ने वैदिक मान्यताओं को आचरण से स्वीकारा है। इस व्यस्तता के युग में बड़ी पुस्तकें पढ़ने के लिये अधिकांश व्यक्तियों के पास समय नहीं है, और कई व्यक्ति कलीष्ट भाषा को पूर्णतया नहीं समझ पाते।

आपके पास हमारे यहाँ की पुस्तकें निःशुल्क पहुँचती रहती हैं। आप इन्हें आद्योपान्त पढ़कर अपने क्षेत्र के लिये जो उपयोगी समझें वे पुस्तकें हमसे अवश्य मँगवाइये। विश्वास कीजिये पुस्तक प्रकाशन हमारा व्यवसाय नहीं है। हम मात्र लागत मूल्य में हमारे यहाँ की पुस्तकें आपको देंगे।

हमारे पास इस समय उपलब्ध हैं वे पुस्तकें :-

१ से १० भाग तक सैद्धान्तिक-चर्चा ❊ दान की दुर्गति ❊ दान के पात्र ❊ आर्यसमाज यह मानता है ❊ आर्यसमाज यह नहीं मानता ❊ कर्म-फल-चक्र ❊ सुकर्म ❊ सुख के साधन ❊ अविद्या का दुष्प्रभाव ❊ सुसंस्कारी सन्तान ❊ शाश्वत सत्य ❊ धर्म का मर्म ❊ वैदिक मान्यताएँ ❊ नारी शिक्षा ❊ आश्रम मर्यादा ❊ भरत का मातृभाव ❊ वैदिक प्रवचनों का सार-भाग-९, १०, १२, १३, १४, १५ ❊ यक्ष-युधिष्ठिर संवाद ❊ सार्वभौम पञ्चमहाव्रत ❊ महर्षि दयानन्द के उपकार भाग-४ से ९ तक ❊ मुक्ति की युक्ति ❊ मोक्ष का मार्ग ❊ आर्य दिनचर्या ❊ सत्य का समर्थन ❊ वाणी का उपयोग ❊ शालाकर्म (गृहप्रवेश) विधि ❊ धर्म का योगदान ❊ श्रीरामचरित मानस के शिक्षाप्रद प्रसंग ❊ मानस के मोती ❊ भगवान श्रीकृष्ण ❊ वैदिक यज्ञ विधि ❊ स्वामी दयानन्द की अनुपम देन ❊ भाग १ से ३ तक।

ये पुस्तकें १५०.०० (एक सौ पच्चास) रुपयों में १०० (एक सौ) मात्र लागत मूल्य में हम आपको देंगे। केवल वैदिक यज्ञ विधि और भगवान श्री कृष्ण नामक पुस्तकें ३५०.०० (तीन सौ पच्चास) रुपयों में १०० (एक सौ) देंगे, क्योंकि ये अधिक पृष्ठों की हैं। इन सभी पुस्तकों का डाक व्यय पृथक् से होगा-

डॉ० वीररत्न आर्य, महामन्त्री वैदिक लेखमाला प्रकाशक न्यास
पोस्ट-मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान) पिन कोड-३०५८०१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

वैदिक लेखमाला का ९६.वाँ पुष्प

महाभारत का सार

भाग-२

सभापर्व एवं अरण्यपर्व का सार

लेखक

वैदिक मिशनरी कमलेशकुमार आर्य अग्निहोत्री

प्रकाशक - पं० कमलेशकुमार वैदिक लेखमाला प्रकाशक न्यास
आर्यसमाज मदनगंज - किशनगढ़ (राजस्थान) पिनकोड ३०५ ८०१
दूरभाष - कार्यालय (०१४६३) २४४०७० निवास (०१४५) २६६२६६२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० कमलेशकुमार वैदिक लेखमाला प्रकाशक न्यास की स्थिरनिधि में योगदान करने वाले यशस्वी दानदाता

५५०००.०० पूज्य स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती, उदयपुर (राज.)
५००००.०० श्रीमती शिवराजवती ओंकारनाथ धर्मार्थ ट्रस्ट, मुम्बई

३१०००.०० श्री इन्द्रजीत जी भाटिया, नासिक द्वारा श्री पूज्य पिता हरीचन्द जी की पुण्य स्मृति में
३००००.०० श्री पुरुषोत्तम अमुलदास रामाणी, चेयरमेन एण्ड मैनेजिंग डायरेक्टर गुजट्रोन अहमदाबाद (गुजरात)
२५०००.०० आर्यसमाज मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)
२१५५१.०० श्रीमती निर्मलादेवी कमलेशकुमार आर्य, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)
२००००.०० श्री आचार्य भद्रसेन धर्मार्थ न्यास अजमेर (राजस्थान)
१११११.०० श्री अशोककुमार चन्द्रलाल अम्बवाणी की पुण्यस्मृति में "अशोक फाउण्डेशन" अहमदाबाद
११०००.०० श्रीमती जसुमती वहिन श्री गंगारामभाई भवानी, पनवेल (महाराष्ट्र)
११०००.०० आर्यसमाज गाँधीधाम-कच्छ
११०००.०० श्री बलदेवराज जी चौधरी वेदप्रचार मण्डल आणंद (गुजरात)
१००००.०० श्रीमान सेठ दुल्हनोमल गामनदास डुलानी, कुबेरनगर अहमदाबाद
५२५१.०० श्रीमान सेठ मथुराप्रसाद जी ओमप्रकाश जी नवाल राजगढ़ (अजमेर)
५१००.०० श्रीमती अलकादेवी श्रीगणेश जी कुमावत, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)
५१००.०० श्रीमती गुलाबदेवी भगवानदत्त जी शर्मा, गाँधीधाम-कच्छ
५१००.०० श्रीमान सेठ श्यामसुन्दर जी आर्य, दिल्ली
५०००.०० श्री विश्वभूषण जी आर्य, मुम्बई
५०००.०० श्री मोहनदास मेवलदास सुगाणी, कुबेरनगर - अहमदाबाद (गुजरात)
५०००.०० श्रीमती वींझीदेवी नेंभराज जादवाणी, ग्वालियर (म.प्र.)
५०००.०० श्रीमती मीरादेवी नन्दलाल जादवाणी एवं परिवार, अहमदाबाद
५०००.०० श्री गोरधनभाई हून्दराजमल रामरखियाणी की पुण्यस्मृति में उनके परिवार की ओर से
५०००.०० श्री कर्मचन्द जी की पुण्यस्मृति में श्री रतनलाल जी खूबाणी, सैजपुर बोघा-अहमदाबाद
५०००.०० श्री चन्द्रकान्त रामरखियाणी, पूजा फर्निचर, नरोड़ा रोड़, अहमदाबाद (गुजरात)
५०००.०० श्री अर्जुनभाई बी. पटेल, श्री विजयलक्ष्मी टिम्बर मार्ट, नरोड़ा रोड़, अहमदाबाद (गुजरात)
५०००.०० श्री हिम्मत जी श्री कस्तूर जी गहलोत, अहमदाबाद (गुजरात)
५०००.०० श्री प्रभुलाल जी लढ्ढा, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)
५०००.०० श्री डाह्याभाई श्री करसनभाई पटेल, नवानगर (गुजरात)
५०००.०० अग्रवाल श्री ज्वालाप्रसाद जी श्री घनश्यामदास जी, जलगाँव (महाराष्ट्र)
५०००.०० श्रीमान सेठ द्वारकाप्रसाद जी श्री कोटूमल जी प्रितमाणी, अहमदाबाद (गुजरात)
५०००.०० श्रीमती हीरावहिन श्री धनजीभाई वेलाणी, मगोडीलाट (गुजरात)
५०००.०० श्रीमती चन्द्रदेवी श्री भगवानदास रामाणी, थलतेज अहमदावाद (गुजरात)
५०००.०० श्री पुरुषोत्तमभाई श्री वालजीभाई वेलाणी, गाँधीधाम-कच्छ
५०००.०० आर्यसमाज दत्तएपार्टमेण्ट, बड़ौदा (गुजरात)
५०००.०० श्रीमती भारतीदेवी श्री भगवानदेव जी आर्य अहमदावाद (गुजरात)
५०००.०० श्रीमती ईश्वरीवाई श्री जेठानन्द जी भाटिया, कुवेरनगर - अहमदावाद (गुजरात)
५०००.०० श्रीमती रत्नादेवी जी श्री वंशीलाल जी उपाध्याय, रायपुर (मध्यप्रदेश)
५०००.०० डॉ० श्री महेशदत्त जी श्रीवास्तव, टूण्डला (उत्तर प्रदेश)
५०००.०० श्रीमान सेठ चन्दूलाल जी अग्रवाल जयभारत टेक्सटाइल, अहमदावाद
५०००.०० श्री ओमप्रकाश जी आलमपुरिया (आर्य) अहमदाबाद (गुजरात)
५०००.०० श्री क्षेमराज जी शर्मा की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र श्री शुद्धबोध जी शर्मा (श्रीगंगानगर)
५०००.०० आर्यसमाज, देवलाली वाजार, कुवेरनगर - अहमदावाद
५०००.०० श्रीमती सुखदेवी हरिशचन्द्र, श्रीवास्तव एवं परिवार, अहमदावाद
५०००.०० श्रीमती रतनवेन श्री विश्राम पटेल सर्वोदय ट्रस्ट घाटकोपर, मुम्बई
५०००.०० श्री लक्ष्मणकुमार जी श्री दिनेशकुमार जी आर्य, सावर (अजमेर)
५०००.०० श्री झाऊलाल जी शर्मा, आर्यसमाज कांकड़वाडी, मुम्बई
५०००.०० मातृश्री धनदेवी केशवराम धर्मार्थ वैदिक ट्रस्ट, भूड बरेली (उ.प्र.) द्वारा श्री गोपालशरण विद्यार्थी
५०००.०० श्रीमती प्रवीणा चन्द्रकान्त आनन्दनगर टीम्बावाड़ी जूनागढ़
५०००.०० श्रीमती चन्द्रभागा पिता श्री महालप्पा जी कटके, गुलवर्गा की पुण्यस्मृति में
५०००.०० श्री आचार्य हरिदेव जी आर्य श्रीमती सुशीला जी आर्या, दिल्ली
५०००.०० श्रीमती अयोध्यावाई धर्मपत्नी श्री प्रह्लादसिंह जी परमार, पोलाय खुर्द खाटसूर (शाजापुर)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभापर्व का सार

(अध्याय ७२, श्लोक २३६०)

मय नामक असुर अर्जुन से बोला - मैं शिल्पकार्य में दक्ष दानवों का विश्वकर्मा हूँ । आपने मेरी रक्षा की है, अतः कहिये मैं ''आपका क्या उपकार करूँ ? तब श्रीकृष्ण यह कह कर कि ''युधिष्ठिर के लिये तुम ऐसी सभा बना दो जिसे देखकर सब लोग आश्चर्य चकित हो जाएँ'' द्वारिका चले गये । तब अर्जुन से आज्ञा प्राप्त कर 'मय' मैनाक पर्वत पर गया और वहाँ से सभा के निर्माणार्थ उपयोगी स्फटिक की सामग्री एवं भीम के लिये गदा और अर्जुन के लिये देवदत्त नामक शंख लेकर आया । फिर चौदह महीने में चारों ओर से दस हजार हाथ चौड़ी सभा बनादी ।

एक दिन उस सभा में बैठे पाण्डवों के पास देवर्षि नारद आये और राज्य व्यवस्था आदि से सम्बन्धित जानकारी ले के इन्द्र, यम, वरुण, कुबेर एवं ब्रह्मा की सभाओं तथा राजा हरिश्चन्द्र द्वारा किये गये राजसूय यज्ञ का वर्णन करके युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करने हेतु प्रेरित कर द्वारिका चले गये । तत्पश्चात् राजसूय यज्ञ करने की इच्छा वाले युधिष्ठिर ने अपने भाइयों तथा मन्त्रियों आदि से विचार विमर्श किया और दूत को द्वारिका भेजकर श्रीकृष्ण को बुलवाया । तब उन्होंने युधिष्ठिर से कहा - इस समय मगधदेश के क्रूर राजा जरासन्ध का आतंक चहुँओर व्याप्त है । उसने ८६ भूपालों को पराजित करके बाँध रखा है । इसलिये उसे मारे बिना आप राजसूय यज्ञ पूर्णतया समाप्त नहीं कर सकते ।

जरासन्ध की शक्ति को देखते हुए युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ करने में जब अपने आपको असमर्थ माना तब भीम बोले - श्रीकृष्ण की नीति, मेरे बल और अर्जुन के साहस से जरासन्ध अवश्य मारा जायेगा । श्रीकृष्ण तथा अर्जुन ने भीम के कथन का समर्थन किया । फिर जरासन्ध के वध का युधिष्ठिर को पूर्ण विश्वास दिलाकर श्रीकृष्ण, भीम और अर्जुन ब्राह्मणवेश मे मगधदेश जा पहुँचे । वहाँ नगर में प्रवेश कर उन्होंने तोड़-फोड़ की और मालियों से मालायें छीनकर अपने गले में डाल लीं ।

जब वे जरासन्ध के पास गये तब उससे यह सुनकर कि ''स्नातक ब्रह्मचारी ब्राह्मण माला धारण नहीं करते । तुम्हारी भुजाओं में धनुष की डोरी के चिह्न बने हुए हैं । तुम लोग तोड़ फोड़ करके गलत दरवाजे से यहाँ आये, सच बताओ तुम कौन हो ? और तुम्हारा अभिप्राय क्या है ?'' श्रीकृष्ण बोले -तुम निर्दोष राजाओं को बलपूर्वक पकड़कर रुद्र के नाम से बलि चढ़ाना चाहते हो । अतएव हम भयभीत जनों का पक्ष लेकर तुम पर शासन करने आये हैं । हम ब्राह्मण नहीं है, मैं कृष्ण हूँ और ये दो वीर पाण्डु के पुत्र हैं । हम तुम्हें ललकारते हैं, स्थिर होकर युद्ध करो अथवा सब राजाओं को छोड़ दो । तब जरासन्ध ने कहा - मैं लड़ने को तैयार हूँ । श्रीकृष्ण के यह पूछने पर कि ''हम तीनों में से तुम किस से लड़ना चाहते हो ?'' जरासन्ध बोला - भीम से ।

उन दोनों का युद्ध कार्तिक मास की प्रतिपदा से आरम्भ होकर त्रयोदशी तक बिना विश्राम लिये निरन्तर होता रहा । चतुर्दशी की रात को जरासन्ध ने थककर पैर पीछे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हटाया । उस समय श्रीकृष्ण के संकेत से भीम ने जरासन्ध की पीठ तोड़कर उसे मार डाला । फिर बन्दी बनाये गये सभी राजाओं को मुक्त कर जरासन्ध के पुत्र सहदेव को मगधदेश का राज्य दे श्रीकृष्ण, भीम तथा अर्जुन के साथ खाण्डवप्रस्थ लौट आये और जरासन्ध वधवाले महान कार्य से युधिष्ठिर सहित सम्पूर्ण पाण्डव कुल को हर्षित करके द्वारिका चले गये ।

जरासन्ध वध से उत्साहित होकर अर्जुन उत्तर दिशा के, भीम पूर्व दिशा के, सहदेव दक्षिण दिशा के और नकुल पश्चिम दिशा के राजाओं को जीत कर उन से बहुत धन ले आये । तब युधिष्ठिर ने आये हुए धनादि का परिमाण जानकर अपने मित्रवर्ग से यज्ञ सम्बन्धी विचार विमर्श आरम्भ किया उस समय वहाँ श्रीकृष्ण आ गये और उन्होंने युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करने के लिये कहा ।

श्रीकृष्ण की आज्ञा से युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ की सामग्री एकत्रित करवाई । उस यज्ञ के ब्रह्मा कृष्णद्वैपायन (वेदव्यास) उद्गाता सुसामा, अध्वर्यु, याज्ञवल्क्य और होता धौम्य बने । सहदेव द्वारा राष्ट्रभर के सब मान्य ब्राह्मणों, राजाओं, वैश्यों तथा शूद्रों को आमन्त्रित करवा युधिष्ठिर यज्ञ में दीक्षित हो गये । तदनन्तर हस्तिनापुर जाकर भीष्म, द्रोण, विदुर, धृतराष्ट्र, कृप आदि को नकुल खाण्डवप्रस्थ ले आये ।

युधिष्ठिर के उस यज्ञ में दुर्योधन, सुबल, शकुनि, अचल, वृषक, कर्ण, ऋत, शल्य, बाह्लीक, सोमदत्त, भूरि, भूरिश्रवा, शल्य, अश्वत्थामा, जयद्रथ, द्रुपद, शाल्व, बृहद्बल, आकर्ष, कुन्तल, वानव, कुन्तीभोज, सुह्म, माचेल्ल, शिशुपाल, बलराम, अनिरुद्ध, ब्रभ्रु, गद, प्रद्युम्न, साम्ब, चारुदेष्ण, उल्मुक, निशठ आदि अनेकानेक राजा एवं प्रतिष्ठित महानुभाव आये ।

तदनन्तर भीष्म, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, दुर्योधन तथा विविंशति से युधिष्ठिर ने यह कहकर कि "आप मुझे यज्ञ सम्बन्धी आवश्यक परामर्श देने की कृपा करें," सबको यथायोग्य अधिकार में नियुक्त किया । अर्थात् भोजन सम्बन्धी कार्य के लिये दुःशासन को, विद्वानों का सत्कार करने हेतु अश्वत्थामा को, राजाओं का सम्मान करने सञ्जय को, स्वर्ण रत्नादि की रक्षा हित कृपाचार्य को, व्यय के लिये विदुर को, उपहार लेने दुर्योधन को और सब अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं अथवा नहीं, यह देखने के लिये भीष्म तथा द्रोणाचार्य को नियुक्त करके यज्ञ आरम्भ किया । तत्पश्चात् राजसूय यज्ञ के अन्त में अभिषेक के दिन महर्षि तथा ब्राह्मण राजाओं के साथ अन्तर्गृह में गये । उस समय भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा - इन उपस्थित महानुभावों में जो सबसे श्रेष्ठ और समर्थ हों, उन्हीं का सर्व प्रथम सम्मान करो ।

युधिष्ठिर के यह पूछने पर कि आप की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ कौन है ? तो भीष्म बोले श्रीकृष्ण । तब युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण को प्रधान अर्घ्य दिया, तो शिशुपाल को श्रीकृष्ण का सम्मान सहन नहीं हुआ । वह भीष्म और युधिष्ठिर को लाञ्छित कर श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में पाण्डवों को कहने लगा - यह न तो ऋत्विक है, न आचार्य और न राजा ही है । इस दुरात्मा ने महात्मा राजा जरासन्ध को अनुचित रूप में मरवाया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, यह पूजा के योग्य नहीं है । फिर श्रीकृष्ण से यह कहकर कि ''अयोग्य होने पर भी तुमने अपनी पूजा के लिये सम्मति कैसै दे दी ? एकान्त स्थान में मिले हवि के भाग को खानेवाले कुत्ते के समान तुम, पूजा के अयोग्य हो'' राजाओं के साथ उस सभा से चला गया । तब युधिष्ठिर शिशुपाल की ओर दौड़े और उसे मीठी वाणी में समझाते हुए बोले - भीष्म श्रीकृष्ण की योग्यता को जानते हैं, आप इनका अनादर मत कीजिये । श्रीकृष्ण की पूजा को अन्य राजाओं की भाँति आप भी मान्यता दीजिये । यह सुनकर भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा इसे समझाना व्यर्थ है । श्रीकृष्ण की महानता को हम जानते हैं, यह नहीं जानता ।

तदनन्तर सहदेव बोले - मेरे द्वारा किया जानेवाला श्रीकृष्ण का सम्मान जिन नरेशों से न सहा जावे मैं उनके सिर पर लात मारता हूँ । मेरे इस वचन का वे उचित उत्तर देवें । यह सुनकर अनेक राजा कुपित हो गये । जब श्रीकृष्ण का सम्मान हो गया तब शिशुपाल ने राजाओं को भड़काकर पाण्डवों से युद्ध करने के लिये प्रेरित किया । क्रोधित राजाओं द्वारा यज्ञ में कोई विघ्न न हो वह उपाय पूछने पर युधिष्ठिर को भीष्म ने कहा - श्रीकृष्ण समर्थ हैं, इनका कोई कुछ भी अनिष्ट नहीं कर सकता । भीष्म द्वारा की गई श्रीकृष्ण की स्तुति को शिशुपाल ने अनर्गल प्रलाप मानकर श्रीकृष्ण को निन्दनीय और ग्वाला बताया, तो भीम को बहुत बुरा लगा । वह कुपित होकर शिशुपाल की ओर दौड़ा तब भीष्म ने उसे पकड़ लिया ।

उस समय शिशुपाल ने युद्ध के लिये श्रीकृष्ण को ललकारा, तो श्रीकृष्ण ने राजाओं को यह कहकर कि ''इस पापी ने मेरी अनुपस्थिति में द्वारिका को फूँक दिया था । रैवतक पर्वत पर राजा भौज के सहचरों को यह मारकर चला गया था । मेरे पिता के अश्वमेध यज्ञ में छोड़े गये घोड़े को इसने चुरा लिया था, और बभ्रु की स्त्री का तथा मद्रा का हरण किया था । यह नराधम वध के योग्य है, मैं इसे क्षमा नहीं करूँगा ।'' चक्र से उसी क्षण शिशुपाल का सिर काट डाला । तब कुछ राजा हर्षित और कुछ कुपित हुए कुछ तटस्थ रहे । युधिष्ठिर ने शिशुपाल का अन्त्येष्टि संस्कार करवाया और उसके पुत्र महिपाल को चेदिराज के अधिकार में अभिषिक्त किया । तत्पश्चात् राजसूय यज्ञ सम्पन्न हुआ, और श्रीकृष्ण सहित सभी राजा आदि अपने-अपने नगरों को लौट गये, केवल दुर्योधन तथा शकुनि वहीं सभा भवन में रहे ।

उन्होंने सभाभवन के सब भागों को देखा । उस समय स्फटिक के बने स्थल भाग को जल जानकर दुर्योधन ने अपने वस्त्र उपर उठा लिये । आगे स्फटिक के समान जल से भरे ताल को स्थल जानकर वह उस में जा गिरा । उसको जल में गिरते देखकर नौकर-चाकर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव बहुत हँसे, और उसे सूखे वस्त्र लाकर दिये । तब क्रोधित हुआ दुर्योधन उनकी हँसी नहीं सह सका । फिर एक दरवाजे को खुला समझ कर उससे जा टकराया और दूसरे दरवाजे को (खुला होने पर भी) बन्द समझ कर उसके पास नहीं गया ।

राजसूय यज्ञ में युधिष्ठिर को प्राप्त हूआ धन देख के और सभाभवन में घटी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटना से लज्जित होकर दुर्योधन हस्तिनापुर लौट आया । वह पाण्डवों की महिमा से व्यथित होकर पीला पड़ गया । तब शकुनि द्वारा पूछे जाने पर उसने पाण्डवों के वैभव और यज्ञ की सफलता को अपने दुःख का कारण बताकर कहा - अब मैं जीना नहीं चाहता, मेरे मर जाने पर मेरी मृत्यु का कारण धृतराष्ट्र को बता दें ।

शकुनि ने दुर्योधन को समझाते हुए जब यह कहा कि पाण्डव अपने पुरुषार्थ से इस अवस्था को प्राप्त हो पाये हैं । तुम्हें उनसे ईर्ष्या नहीं करनी चाहिये । तुम भी अपने साथियों की सहायता से धरती को जीतो । तब दुर्योधन बोला आपकी आज्ञा हो तो आपका और महारथी राजाओं का सहयोग लेकर मैं पाण्डवों को युद्ध में परास्त करूँ । यह सुनकर शकुनि ने दुर्योधन को बताया - महाबली पाण्डवों को युद्ध में नहीं जीता जा सकता । उन्हें परास्त करने का सरल उपाय है जुआ । क्योंकि युधिष्ठिर जुआ से बहुत प्रेम करते हैं, किन्तु जुआ खेलना जानते नहीं और जुआ खेलने के लिये बुलाने पर कभी मुँह नहीं मोड़ते । मैं जुआ खेलने में बहुत कुशल हूँ, इसलिये तुम अपने पिता से कहकर जुआ खेलने के लिये युधिष्ठिर को बुलाओ । तब दुर्योधन बोला इस कार्य के लिये मेरे पिता को आप ही कहिये ।

शकुनि ने दुर्योधन की अवस्था से धृतराष्ट्र को अवगत किया, तब धृतराष्ट्र के पूछने पर दुर्योधन ने चिन्ता का कारण पाण्डवों की संवृद्धि और अपनी हीनता बताते हुए कहा मेरे मामा पाण्डवों के साथ चौपड़ खेलकर उनकी सम्पदा छीनना चाहते हैं, आप इन्हें आज्ञा दीजिये । उस समय धृतराष्ट्र के यह कहने पर कि "इस कार्य के लिये विदुर को पूछ कर निश्चय करूँगा ।" दुर्योधन बोला - यदि मेरी बात नहीं मानी गई तो मैं मर जाऊँगा ।

दुर्योधन की कातरवाणी सुनके धृतराष्ट्र ने अपने सेवकों को कहा - एक हजार खम्भोंवाला सुन्दर भवन बनवाओ । फिर विदुर को बुलवाकर उनसे कहा तुम खाण्डवप्रस्थ जाओ, और चौपड़ खेलने के लिये युधिष्ठिर को यहाँ लेआओ । धृतराष्ट्र का अशुभ आदेश सुनकर विदुर यह सोचते हुए कि अब कौरव कुल का अन्त आ गया है, खाण्डवप्रस्थ पहुँचे और वहाँ से युधिष्ठिर एवं उनके सभी भाइयों को द्रौपदी सहित साथ लेकर हस्तिनापुर आगये । वहाँ रात्रि विश्राम के पश्चात् नवनिर्मित भवन में प्रवेश कर भीष्म, द्रोण, कृप, कर्ण एवं दूर-दूर से आये राजाओं आदि की उपस्थिति में युधिष्ठिर दुर्योधन द्वारा नियुक्त किये गये शकुनि के साथ जुआ खेलने लगे, और स्वर्ण से सुशोभित मणिमय हार, सहस्रों मुद्राओं से भरे अनेक सन्दूक, अक्षय धन, रथ, घोड़े, हाथी, दासियाँ, दास आदि एक-एक करके दाँव पर लगाकर सब हार गये । यह देखकर विदुर बोले - जुआ झगड़े की जड़ है, इसका परिणाम बहुत बुरा होगा । अर्जुन को चाहिये कि दुर्योधन को बन्दी बनालें और शकुनि यहाँ से चला जावे ।

जब विदुर को डाँटते हुए दुर्योधन ने यह कहा कि हम अपना हित अहित स्वयं जानते हैं, हमें तुम्हारे परामर्श की आवश्यकता नहीं है । तुम मित्र रूप में हमारे शत्रु हो, यहाँ से चले जाओ । तब विदुर बोले - संसार में प्रिय बोलनेवाले मनुष्य सहज ही मिल जाते हैं । किन्तु हितकारी कठोरवाणी कहने और सुननेवाले व्यक्ति बहुत कम होते हैं ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं धृतराष्ट्र के यश और धन की वृद्धि चाहता हूँ, इसलिये मैंने यह कहा है । तत्पश्चात् युधिष्ठिर पहने हुए आभूषणों सहित अपने सभी भाइयों को और अपने आपको दाँव पर लगाकर हार गये । अब उनके आगे दाँव पर लगाने के लिये कुछ शेष नहीं रहा तो शकुनि के कहने,से उन्होंने अन्तिम बाजी द्रौपदी की लगा दी । उस समय वहाँ बैठे हुए वृद्धों के मुँह से धिक्कार-धिक्कार के शब्द निकलने लगे । सारी सभा क्षुब्ध हो उठी, राजाओं को शोक ने घेर लिया, भीष्म, द्रोण, कृप आदि के पसीना छूटने लगा, विदुर मूर्च्छित से हो गये । परन्तु धृतराष्ट्र प्रसन्न होकर पूछने लगे "कौन जीता ?"

जब युधिष्ठिर द्रौपदी को भी हार गये तब दुर्योधन बोला - हे क्षत् ! द्रौपदी को लाओ, वह हमारी दासियों के साथ रह कर सेवा करे । यह सुनकर विदुर ने कहा - अपने आपको हार जाने के पश्चात् युधिष्ठिर द्रौपदी को दाँव पर नहीं लगा सकते, तो दुर्योधन ने विदुर को धिक्कारा और कटु वचन कहे । फिर द्रौपदी को लाने के लिये अपने सारथि प्रतिकामी को भेजा । उसने जाकर द्रौपदी से कहा - दुर्योधन ने तुम्हें जुए में जीत लिया है । अब धृतराष्ट्र के भवन में दासी का कार्य करने के लिये मैं तुम्हें लेने आया हूँ । तब द्रौपदी बोली - जाओ उस जुआरी से यह पूछकर आओ कि वह पहले स्वयं हारा या मुझे ।

सभा में लौटकर प्रतिकामी ने द्रौपदी का वचन कहा तो युधिष्ठिर प्राण रहित से हो गये, कुछ बोले नहीं । दुर्योधन के यह कहने पर कि द्रौपदी स्वयं यहाँ आकर इस प्रश्न को पूछे। प्रतिकामी पुनः गया और युधिष्ठिर ने भी अपना दूत भेजा । तो रजस्वला होने के कारण एक वस्त्र पहिनी रोती हुई द्रौपदी सभा में आकर श्वसुर के सामने खड़ी हो गई । तब दुर्योधन की आज्ञा से दुःशासन द्रौपदी के बाल पकडकर उसे सभा में खींच लाया । उस समय कोई कुछ बोला नहीं, तो द्रौपदी ने भरतवंशी क्षत्रियों को धिक्कारा । तब भीष्म बोले - स्त्री को अपने पति की आज्ञा का पालन करना चाहिये। किन्तु तुम्हें दाँव पर लगाने का अधिकार युधिष्ठिर को है या नहीं, यह हम ठीक से नहीं कह सकते ।

उस समय भीम को युधिष्ठिर पर क्रोध आया, तब अर्जुन ने भीम को शान्त किया । धृतराष्ट्र के पुत्र विकर्ण ने द्रौपदी का पक्ष लेते हुए कहा - यह जीती नहीं गई, तो कर्ण ने उसे डाँटा और द्रौपदी को वेश्या बताकर दुःशासन से कहा पाण्डवों के और द्रौपदी के वस्त्र उतार लो । यह सुनकर पाण्डव लोग अपना वस्त्र उतारकर सभा में बैठ गये, और दुःशासन द्रौपदी का वस्त्र खींचने लगा, तो उसके भीतर से अन्य रंग बिरंगे अनेक वस्त्र निकलने लगे । तब वहाँ सभा में राजाओं का हा हाकर मच गया । उस दृश्य को देखकर भीम ने प्रतिज्ञा की कि में दुःशासन का हृदय चीर कर इसका रक्त पीऊँगा ।

जब सभा के बीच में द्रौपदी का वस्त्र ढेर हो गया, तब दुःशासन थककर जा बैठा तत्पश्चात् विदुर ने उपस्थित राजाओं से कहा - आप लोग द्रौपदी के प्रश्न का उत्तर क्यों नहीं देते ? जब राजा कुछ नहीं बोले तब कर्ण ने दुःशासन से कहा इस दासी को धृतराष्ट्र के घर में पहुँचा दो । दुःशासन द्रौपदी को पुनः खींचने लगा तो विलाप करती हुई द्रौपदी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोली - हे कुरुवंशियो ! मुझे जीती वा अजिती जो मानते हो वह कहो । तब कर्ण ने कहा पाँचों पाण्डव हार गये हैं, वे तुम्हारे पति नहीं रहे, इसलिये तुम हमारे घर में रहो ।

दुर्योधन ने वस्त्र हटाकर द्रौपदी को अपनी बाईं जाँघ दिखाई तो भीम ने उस जाँघ को तोड़ने की प्रतिज्ञा की । राजा धृतराष्ट्र दुर्योधन को डाँटकर द्रौपदी से बोले - तुम मेरी सब वधुओं में उत्तम हो, इसलिये हम से वर माँगो । तब द्रौपदी ने कहा - युधिष्ठिर दासभाव से मुक्त हो जाये, और शेष चारों पाण्डवों को धनुष, रथ सहित मैं माँगती हूँ, तो धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर से कहा - तुम निर्विघ्न होकर धन सहित जाओ, और अपने राज्य का शासन करो, जो हुआ उसे भूल जाओ ।

युधिष्ठिर ने अपने सभी भाइयों और द्रौपदी सहित इन्द्रप्रस्थ के लिये प्रस्थान किया, यह जानकारी दुःशासन से प्राप्त कर दुर्योधन धृतराष्ट्र के पास गया, और बोला - आपने यह अच्छा नहीं किया । हम से अपमानित हुए पाण्डव हमारा नाश कर देंगे । अतः हम अपनी रक्षा के लिये पाण्डवों के साथ पुनः जुआ खेलना चाहते हैं । तब पुत्र मोह के वशीभूत होकर धृतराष्ट्र बोले - यदि पाण्डव दूर निकल गये हों तो भी उन्हें शीघ्र लौटा लाओ ।

द्रौण, कृप, विदुर, अश्वत्थामा, युयुत्सु, भीष्म, विकर्ण, गान्धारी के मना करने पर भी धृतराष्ट्र की आज्ञा से पाण्डवों को (बीच मार्ग से ही) जुआ खेलने के लिये प्रतिकामी वापिस ले आया । वे फिर जुआ खेलने बैठ गये । तब शकुनि ने कहा इस बार एक ही बाजी होगी, उसके अनुसार हारने वालों को मृगचर्म धारण कर बारह वर्ष तक वन में और फिर एक वर्ष कहीं छिपकर रहना होगा । युधिष्ठिर के सहमत होने पर शकुनि ने पासे फैंककर कहा - "लो मैं जीत गया" तब हारे हुए पाण्डवों को द्रौपदी सहित वन में जाते देखकर दुःशासन बोला - "दुर्योधन का राज्य अखण्ड हुआ" । उस समय दुर्योधन ने पाण्डवों का उपहास किया और विदुर ने कहा-वृद्धा कुन्ती मेरे पास रहेगी । हस्तिनापुर के अनेक ब्राह्मण भी पाण्डवों के साथ वन में गये ।

धृतराष्ट्र के यह पूछे जाने पर कि पाण्डव वन में किस प्रकार से जा रहे हैं ? विदुर ने बताया युधिष्ठिर वस्त्र से अपना मुँह छिपाकर, भीम अपनी भुजाओं को उठाकर अर्जुन धूल उड़ा-उड़ाकर सहदेव मुख पर तथा नकुल शरीर पर मिट्टी लगाकर द्रौपदी बालों से मुख को छिपाकर और धौम्य हाथ में कुश लेकर जा रहे हैं, यह सुनकर धृतराष्ट्र चिन्तित हुआ ।

(सभापर्व समाप्त हुआ)

अरण्यपर्व का सार

(अध्याय २६९, श्लोक १०३१६)

हस्तिनापुर से उत्तर दिशा की ओर वन में चलते हुए प्रमाणकोटिवृक्ष के समीप पहुँचकर ब्राह्मणों सहित पाण्डवों ने वहाँ रात बिताई । फिर उन्होंने शौनक नामक एक ब्राह्मण से सदुपदेश सुनकर काम्यकवन वन में प्रवेश किया ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाण्डव वन गमन के पश्चात् धृतराष्ट्र के यह पूछने पर कि "नगरवासी हमें विश्वसनीय मानें और पाण्डव जड़ सहित नहीं उखाड़ सकें इसके लिये क्या करना चाहिये" विदुर ने कहा - दुर्योधन को कैद करके युधिष्ठिर को राज्य का अधिकार दे दीजिये, तो पुत्र मोह के कारण धृतराष्ट्र ने विदुर को पाण्डवों का शुभ चिन्तक बताकर तिरस्कृत किया । तब विदुर यह कहके कि "अब कौरव कुल नहीं बचेगा" पाण्डवों के पास वन में गये, और धृतराष्ट्र से हुई चर्चा से उन्हें अवगत किया ।

विदुर के चले जाने पर धृतराष्ट्र चिन्तित और दुःखी हुए । फिर उन्होंने सञ्जय को भेजकर विदुर को बुलवा लिया । विदुर का वापिस लौट आना दुर्योधन को अच्छा नहीं लगा । जब कर्ण ने यह कहा कि हम पाण्डवों को मारने वन में चलें । तब वहाँ आये कृष्णद्वैपायन (वेदव्यास) बोले-पाण्डवों के साथ अन्याय हुआ है, अब उनके लिये आगे कुछ मत करो, अन्यथा परिणाम अच्छा नहीं होगा । मुनि मैत्रेय ने भी यही कहा कि पाण्डवों के साथ शत्रुता करना उचित नहीं है । फिर काम्यकवन में भीम ने किर्मीक राक्षस को मार डाला है, यह जानकारी विदुर से प्राप्त कर धृतराष्ट्र बहुत चिन्तित हुए ।

पाण्डवों के वनवास की सूचना मिलने पर धृष्टद्युम्न धृष्टकेतु, श्रीकृष्ण आदि काम्यकवन में जाकर पाण्डवों से मिले, और उन्होंने शकुनि, दुर्योधन, दुःशासन, कर्ण के प्रति अपना रोष व्यक्त किया । उस समय रोती हुई द्रौपदी ने अपने साथ हुए दुर्व्यवहार का वर्णन किया तो श्रीकृष्ण बोले तुम जिन पर कुपित हो उनके मरने पर उनकी स्त्रियाँ रोयेंगी । फिर उन्होंने युधिष्ठिर से कहा यदि मैं द्वारिका में होता तो अवश्य ही द्यूतस्थान पर पहुँचता, और जुआ नहीं खेलने देता । वे लड़ते तो उन्हें मार डालता । मैं शाल्व से युद्ध करने गया हुआ था, इसलिये हस्तिनापुर में नहीं आ पाया । तत्पश्चात् श्रीकृष्ण द्वारिका और पाण्डव द्वैतवन में चले गये ।

द्वैतवन में एक दिन द्रौपदी ने पाण्डवों की दुर्दशा का वर्णन करते हुए धृतराष्ट्र दुर्योधन आदि पर क्रोध प्रकट किया, तो युधिष्ठिर ने उसे क्षमा का महत्व बताया । भीम ने द्रौपदी का पक्ष लेते हुए हस्तिनापुर पर चढ़ाई करने को कहा । किन्तु युधिष्ठिर ने धर्म की दुहाई देकर भीम के विचार से अपनी असहमति व्यक्त की और बताया - दुर्योधन के साथ बड़े-बड़े महारथी हैं, हम अभी विजयी नहीं हो सकते । उस समय वहाँ वेदव्यास आये और यह कहकर लौट गये कि अर्जुन,इन्द्र शिव आदि के पास जाकर अस्त्र-शस्त्र प्राप्त करे ।

तदनन्तर पाण्डव पुनः काम्यकवन में आ गये । तब अर्जुन पहले हिमगिरि पर तथा फिर शिव के पास गये । अर्जुन ने शिव से पाशुपतास्त्र और उसके संचालन का प्रशिक्षण प्राप्त किया । वहाँ से इन्द्र का सारथि मातलि अर्जुन को रथ द्वारा इन्द्र के पास ले गया । तब इन्द्र ने अर्जुन को वज्र नामक अस्त्र और अशनि नामक शस्त्र देकर नाच-गान का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिये चित्रसेन के पास भेज दिया । फिर महर्षि लोमश से कहा आप काम्यकवन में जाकर युधिष्ठिर से कह देवें कि अर्जुन की ओर से कोई चिन्ता न करें । वह अस्त्र- शस्त्र तथा नाचने-गाने का प्रशिक्षण प्राप्त करके आयेंगे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्त्र-शस्त्र प्राप्त करने अर्जुन इन्द्र के पास गये हैं, इस जानकारी से चिन्तित होकर धृतराष्ट्र ने सञ्जय से कहा - अब हमारा विनाश निश्चित है, तो सञ्जय ने पाण्डवों के साथ दुर्योधन आदि के किये गये दुर्वव्यहारों का स्मरण कराके युद्ध होना अनिवार्य बताया ।

काम्यकवन में रह रहे पाण्डवों के पास एक दिन आये बृहदश्व नामक मुनि के समक्ष युधिष्ठिर ने जुआ खेलने के कारण हुई अपनी दुर्दशा का वर्णन किया, तो उन्होंने निषध नरेश वीरसेन के पुत्र नल तथा विदर्भ के राजा भीम की पुत्री दमयन्ती का इतिहास सुनाकर युधिष्ठिर को धैर्य प्रदान करते हुए कहा - जुए में हार ने पर उन्हें तुम से भी अधिक कष्ट सहने पड़े थे ।

उन्होंने युधिष्ठिर को बताया - स्वयंवर में दमयन्ती ने नल का वरण किया, और वह अपने पति के साथ सुखपूर्वक रहने लगी । दुर्भाग्यवश राजा नल अपने भाई पुष्कर के साथ जुआ खेलकर सब कुछ हार गये तो केवल एक वस्त्र पहनी दमयन्ती को साथ लेकर जंगल में चले गये । वहाँ भूख प्यास से पीड़ित नल ने पक्षियों को पकड़ने के लिये उन पर अन्तरीय वस्त्र डाला उसे वे पक्षी ले उड़े । तब अपने पति नल से यह सुनकर कि "मैं तुम्हारे लिये भोजन का प्रबन्ध नहीं कर पा रहा । अतः तुम कहीं चली जाओ" दमयन्ती बोली - ऐसे संकट में आपको मैं नहीं छोड़ सकती । जब दमयन्ती गहरी नींद में सो रही थीं, तब तलवार से उसके आधे वस्त्र को काटकर अपना तन ढक के नल चुपचाप वहाँ से चला गया । नींद से जागकर दमयन्ती ने अपने तन पर पूरा वस्त्र और नल को नहीं देखा तो बहुत विलाप किया ।

उस निर्जन वन में वह नल को ढूँढ़ने लगी, उस समय एक अजगर ने उसे पकड़ लिया । तब एक व्याध अजगर को मारकर दमयन्ती के साथ बलात्कार करने हित व्याकुल हुआ तो उसके शाप से वह मर गया । वन में नल को खोजती हुई दमयन्ती ने तपस्वियों के आश्रम पर जाकर उन्हें आपबीती सुनाई । फिर चेदिदेश जा रहे व्यपारियों के साथ होकर "पद्म सौगन्धिक" नामक तालाब के पास जाकर ठहरी । वहाँ रात में सब सो गये तब पानी पीने आये हाथियों ने उनमें से अनेकों को कुचल डाला । उस समय जो बच गये उनके साथ चलकर आधा वस्त्र पहनी दमयन्ती चेदिदेश के राजा सुबाहु के नगर में पहुँची तो उसे पागल समझकर वहाँ खेल रहे लड़के उसके पीछे पड़ गये । यह देखकर वहाँ की राज माता दमयन्ती को अपने महल में ले गई और अपनी पुत्री सुनन्दा से बोली - तुम इसके साथ रहो ।

उधर नल ने वन में घूमते हुए जलती अग्नि में घिरे कर्कोटक नामक नाग को बचाया, तो उसने नल को काटकर कहा - आपको कोई न जान सकें इसलिये मैंने आपके रूप को नष्ट किया है । अब आप अयोध्यानगरी में राजा ऋतुपर्ण के पास जाकर कहिये कि मैं बाहुक नामक सूत हूँ । नल ने ऐसा ही किया । राजा ऋतुपर्ण ने उन्हें सारथि बना लिया ।

नल के राज्य भ्रष्ट होने की जानकारी प्राप्त कर राजा भीम ने नल को खोजने के लिये ब्राह्मणों को भेजा । वे विभिन्न स्थानों पर होते हुए, चेदिदेश पहुँचे, तो उन्होंने सुनन्दा के पास बैठी दमयन्ती को देखा, और राजमाता को बताया - यह राजा नल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की स्त्री है । तब राजमाता ने यह कहकर कि तुम मेरी बहिन की पुत्री हो, उसे विदर्भ (उसके पिता के पास) भेज दिया । वहाँ पहुँच कर दमयन्ती ने अपनी माता से कहा - यदि मुझे जीवित देखना चाहती हो तो नल को लाने का यत्न करो । फिर राजा भीम ने नल को ढूँढ़ने के लिये ब्राह्मणों को भेजा । उनमें से पर्णाद नामक ब्राह्मण ने विदर्भ लौटकर दमयन्ती को बताया - अयोध्यानगरी में भांगस्वर के पुत्र राजा ऋतुपर्ण का सारथि 'बाहुक' कह रहा था कि मूर्ख पति ने संकट में पड़ने के कारण अपनी स्त्री को छोड़ दिया । उसके वस्त्र को लेकर पक्षी उड़ गये । इत्यादि...

तदनन्तर दमयन्ती ने सुदेव ब्राह्मण के द्वारा ऋतुपर्ण के पास यह सन्देश भिजवाया कि दमयन्ती अपना दूसरा विवाह करना चाहती है, यदि सम्भव हो तो तुम वहाँ शीघ्र जाओ । क्योंकि नल जीवत है अथवा नहीं, इसका कोई पता नहीं है । यह सुनकर राजा ऋतुपर्ण विदर्भ के लिये प्रस्थित हुआ । नल आकाश मार्ग से रथ द्वारा ऋतुपर्ण को तीव्र गति से ले जा रहे थे, उस समय तत्काल ऋतुपर्ण ने कहा - रथ को रोको, मेरा दुपट्टा पृथ्वी पर गिर गया, तो नल बोले वह चार कोस पीछे रह गया है ।

नल ने राजा ऋतुपर्ण को सायंकाल तक विदर्भ पहुँचा दिया । तव दमयन्ती ने एक केशिनी नामक दूती को भेजकर पता लगाया तो उसे ज्ञात हुआ राजा ऋतुपर्ण को लेकर आनेवाले उसके पति राजा नल ही है । उस समय तक सर्प विष से हुई नल की कुरूपता समाप्त हो गई : तत्पश्चात् दमयन्ती को साथ लेकर वे निषधदेश गये और सुखपूर्वक रहते हुए राज्य करने लगे ।

एक दिन काम्यकवन में द्रौपदी ने भीम,नकुल, सहदेव तथा युधिष्ठिर से कहा - अर्जुन के बिना यहाँ अच्छा नहीं लगता, हम कहीं अन्यत्र चलें । उस समय उनके पास नारद आये और उन्होंने विभिन्न तीर्थों का महत्व बताया । फिर वहाँ लोमश मुनि ने आकर कहा - अर्जुन ने अत्यन्त शक्तिशाली अस्त्र-शस्त्र प्राप्त कर लिये हैं, और नाच गान भी सीख लिया है । अब अस्त्र-शस्त्र संचालन का प्रशिक्षण प्राप्त कर वे आपके पास आयेंगे । उन्होंने अनेक कथाएँ भी सुनाईं । तत्पश्चात् नन्दा, अपरनन्दा आदि नदियों एवं कलिंगदेश, महेन्द्र पर्वत को पार करके पाण्डव अपने समूह सहित प्रभास तीर्थ पर पहुँचे । तब श्रीकृष्ण, बलराम आदि उन से मिलकर गये । वहाँ से श्वेतगिरि, मन्दराचल, कैलास, बद्रिकाश्रम, गन्धमादन आदि पर्वतों की कष्टप्रद यात्रा करते हुए वे नारायण आश्रम में जाकर रहे । इस यात्रा में भीम द्वारा बुलाया उनका पुत्र घटोत्कच भी साथ रहा ।

वहाँ एक दिन जटासुर ने युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव और द्रौपदी का हरण कर लिया । तब भीम ने उस राक्षस को मारकर उन्हें मुक्त कराया । तत्पश्चात् वृषपर्वा तथा आर्ष्टिषेण मुनि के आश्रम पर होते हुए गन्धमादन पर्वत पर भीम ने युद्ध में अनेक राक्षसों को मारा और कुबेर से पाण्डवों ने आशीर्वाद प्राप्त किया । फिर अर्जुन के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे पाण्डवों के साथ ऋषि-मुनि तथा गन्धर्व आदि आकर बैठ गये ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग पाँच वर्ष के पश्चात् मातलि के साथ रथ में आये अर्जुन को देखकर सभी हर्षित हुए । उस समय वहाँ 'इन्द्र' युधिष्ठिर से यह कहकर गये कि आप पृथ्वी पर राज्य करेंगे, अब काम्यकवन में लौट जावें । युधिष्ठिर के यह पूछने पर कि शिव और इन्द्र को तुमने कैसे प्रसन्न किया ? अर्जुन ने बताया - एक ब्राह्मण के कहे अनुसार तप करके मैंने शिव और इन्द्र से अस्त्र-शस्त्र प्राप्त किये तथा विश्वावसु के पुत्र चित्रसेन से नाच गान सीखा । प्राप्त दिव्य अस्त्रों का संचालन करके अर्जुन ने युधिष्ठिर को दिखाया उस समय पृथ्वी वृक्षों सहित काँप उठी । समुद्र नदी उमड़ने लगे, वायु का चलना, सूर्य का चमकना, अग्नि का जलना बन्द हो गया । भूमि के भीतर रहने वाले प्राणी बाहर निकल आये । उस समय नारद ने आकर कहा - इन दिव्य अस्त्रों को अभी मत चलाओ ।

तदनन्तर वहाँ से चलकर पाण्डव अपने साथियों सहित पहले द्वैतवन में और फिर काम्यक वन में पहुँचे । तब श्रीकृष्ण सत्यभामा के साथ आकर उनसे मिले । फिर श्रीकृष्ण ने द्रौपदी से कहा - तुम्हारे पाँचों पुत्र द्वारिका में अस्त्र-शस्त्र संचालन का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं, और युधिष्ठिर को यह विश्वास दिलाया कि प्रतिज्ञा की अवधि समाप्त होते ही यादवों के बाणों से कौरव कुल का नाश होगा । उस समय वहाँ मुनि मार्कण्डेय आये । उन्होंने युधिष्ठिर को कर्मफल, ब्राह्मण महात्म्य एवं वैवस्वतमनु के चरित्र आदि से सम्बन्धित जानकारियाँ दीं, और अन्य अनेकानेक कथाएँ सुनाईं ।

श्रीकृष्ण की पटरानी (सत्राजित् की पुत्री) सत्यभामा के यह पूछने पर कि "तुम अपने पाँचों पतियों को प्रसन्न कैसे रखती हो" ? द्रौपदी ने बताया - "मैं काम, क्रोध, अहंकार को छोड़कर अपने पतियों की सेवा करती हूँ । मैं पर पुरुष से प्रेम नहीं करती । पतियों को भोजन कराके ही मैं भोजन करती हूँ । अकेली कहीं घूमती नहीं । परिश्रम से जी नहीं चुराती, इत्यादि... । इस चर्चा के पश्चात् श्रीकृष्ण सत्यभामा को साथ लेकर द्वारिका चले गये और पाण्डव अपने साथियों को विदा करके द्वैतवन में पहुँचे ।

एक दिन एक भ्रमणशील ब्राह्मण ने हस्तिनापुर जाकर वन में रह रहे पाण्डवों की दयनीय अवस्था का वर्णन किया, तो पाण्डवों के साथ हुए दुर्व्यवहार, अत्याचार को स्मरण कर धृतराष्ट्र बहुत चिन्तित और भयभीत हुए । उस समय कर्ण की उपस्थिति में शकुनि ने दुर्योधन से कहा - बहुमूल्य आभूषणों और वस्त्रों से सुसज्जित कौरव स्त्रियों को साथ लेकर द्वैतवन में रह रहे पाण्डवों तथा द्रौपदी का जी जलाने हमें उनके पास चलना चाहिये । फिर उस वन में आये गौ समूह को देखने के बहाने धृतराष्ट्र से आज्ञा लेकर दुर्योधन, कर्ण, दुःशासन, शकुनि आदि हजारों स्त्रियों के साथ द्वैतवन में पहुँचे । उस समय पाण्डव वहाँ बारह दिन का राजर्षि यज्ञ कर रहे थे ।

कौरव जब यज्ञस्थल की ओर बढ़े तो गन्धर्वों ने उन्हें रोक दिया, और युद्ध में कौरवों को परास्त करके राजस्त्रियों तथा दुर्योधन को बन्दी बना लिया । तब युद्ध से भागे हुए दुर्योधन के मन्त्रियों ने युधिष्ठिर के पास जाकर प्राण भिक्षा माँगी, तो युधिष्ठिर की आज्ञा से भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव ने गन्धर्वों से युद्ध करके राजस्त्रियों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहित दुर्योधन को छुड़वा लिया । उस समय अर्जुन के यह पूछने पर कि "आप लोग यहाँ कैसे आये ?" गन्धर्वराज चित्रसेन ने बताया - यह ज्ञात होने पर कि द्रौपदी की हँसी उड़ाने कौरव द्वैतवन में पहुँच रहे हैं, अतः इन्हें रोकने के लिये इन्द्र ने हमें भेजा । युधिष्ठिर ने चित्रसेन का उपकार मानकर उन्हें सेना सहित विदा किया । फिर गन्धर्वों के बन्धन से मुक्त हुए, दुर्योधन आदि कौरव युधिष्ठिर से यह सुनकर कि "फिर ऐसा दुःसाहस मत करना," लज्जा से सिर नीचा करके हस्तिनापुर के लिये चल पड़े ।

युधिष्ठिर द्वारा जीवन दान दिये जानेवाली घटना से दुर्योधन को बहुत आघात लगा । इसलिये अपने साथियों सहित मार्ग में चलते हुए वह कर्ण से यह कहकर कि "गन्धर्वों के साथ युद्ध करते समय मेरे लिये मरजाना अच्छा था," बैठ के रोने लगा । तब दुःशासन भी रोया और प्राण त्यागने के लिये बैठे दुर्योधन को समझाने लगा । कर्ण तथा शकुनि ने दुर्योधन को उत्साहित करने का पूरा प्रयास किया, किन्तु वह अपने निश्चय पर दृढ़ रहा । उस समय दानवों ने आकर जब यह कहा कि हम पाण्डवों को मारने में आपको पूर्ण सहयोग देंगे, तब साहस बटोर कर दुर्योधन हस्तिनापुर आया । वहाँ भीष्म ने दुर्योधन से कहा - तुम को शत्रुओं ने पकड़ लिया और पाण्डवों ने छुड़वाया इस पर भी तुम्हें लज्जा नहीं आई । कर्ण भी उस समय डरकर युद्ध से भाग गया, उसका बल भी तुमने देख लिया । इसलिये पाण्डवों से सन्धि करना मैं हितकर समझता हूँ । किन्तु दुर्योधन ने भीष्म के इस सुझाव पर कोई ध्यान नहीं दिया ।

अपने मन्त्रियों से दुर्योधन द्वारा यह पूछे जाने पर कि "अब हमें क्या करना चाहिये ?" कर्ण बोला - "राजसूय यज्ञ करो" । उस समय ब्राह्मणों ने कहा युधिष्ठिर और धृतराष्ट्र के जीते जी राजसूय यज्ञ नहीं हो सकता, विष्णुयज्ञ करना ठीक रहेगा । उस यज्ञ में पाण्डवों को बुलाने के लिये दुःशासन ने एक दूत भेजा । उसे भीम ने कहा - युधिष्ठिर तो हस्तिनापुर तभी जायेंगे जब अस्त्र और शस्त्रों की अग्नि में दुर्योधन की आहुति दे चुकेंगे । दूत ने आकर भीम के कहे वाक्य दुर्योधन को सुना दिये ।

यज्ञ समाप्त होने पर कर्ण ने दुर्योधन से कहा - मेरी अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार पाण्डवों को मैं युद्ध में मार दूँगा, तब आप राजसूय यज्ञ करें । इस जानकारी से युधिष्ठिर चिन्तित हुए । तत्पश्चात् अपने साथियों सहित वे काम्यकवन में चले गये। तब तक उनके वनवास के ग्यारह वर्ष बीत गये । उस समय वहाँ वेदव्यास आये और पाण्डवों को अनेक कथाएँ सुनाने के पश्चात् यह कह कर गये कि तेरह वर्ष पूरे होने पर तुम पुनः राज्य प्राप्त कर लोगे ।

काम्यकवन में रह रहे पाण्डवों की अनुपस्थिति में एक दिन वृद्धक्षत्र का पुत्र सिन्धुदेश का राजा जयद्रथ विवाह करने की इच्छा से शाल्वदेश को जाते समय वन में खड़ी द्रौपदी के पास अपने साथ चल रहे राजा कोटिकाश्य को भेजकर उसका परिचय जाना । फिर द्रौपदी के पास पहुँचकर बोला - पाण्डव राज्य से भ्रष्ट हो गये हैं, उन्हें छोड़कर मेरी स्त्री हो जाओ । जब द्रौपदी ने पाण्डवों के बल पराक्रम का वर्णन करके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयद्रथ को डाँटा तब वह द्रौपदी को बलात् रथ में डालकर चल पड़ा । मुनि धौम्य रथ के पीछे भागने लगे ।

पाण्डव अपने आश्रम पर लौटकर आये तो धात्री ने बताया द्रौपदी को जयद्रथ खींच कर ले गया है । पाण्डव जयद्रथ को पकड़ने दौड़े तब उन्हें आते देखकर द्रौपदी को रथ से उतारके वह भाग गया । उस समय युधिष्ठिर, द्रौपदी तथा मुनि धौम्य को लेकर नकुल, सहदेव सहित आश्रम पर लौट आये, और भीम व अर्जुन ने जाकर जयद्रथ को पकड़ लिया । उस समय भीम जयद्रथ को मारने लगा तो अर्जुन ने यह कह कर कि "हमारी बहिन दुःशला विधवा हो जायेगी" उसे बचा दिया । फिर जयद्रथ के बाल काटकर भीम, अर्जुन उसे युधिष्ठिर के पास ले आये । तब युधिष्ठिर से धिक्कार और क्षमादान प्राप्त कर वह अपने घर लौट गया । तत्पश्चात् वहाँ आये मार्कण्डेय मुनि ने अधीर पाण्डवों को राम और रावण का इतिहास सुनाकर धैर्य प्रदान किया ।

जब युधिष्ठिर ने यह कहा कि मैं राज्य नष्ट होने का इतना शोक नहीं करता जितना संकट ग्रस्त द्रौपदी का । तब मुनि मार्कण्डेय बोले - सावित्री ने भी दुःख सहन किये थे । उन्होंने बताया - मद्रदेश के अश्वपति नामक निःसन्तान राजा ने यज्ञ और तप किया तो उनकी पटरानी के गर्भ से एक कन्या उत्पन्न हुई, उन्होंने उसका नाम सावित्री रखा । जब वह विवाह के योग्य हो गई तो राजा ने उसे कहा - तुम अपने लिये वर ढूँढ़ लो, मैं उसके साथ तुम्हारा विवाह कर दूँगा । यह सुनकर सावित्री वर की खोज में चली, और विभिन्न स्थानों पर होती हुई अपने पिता के घर लौट आई । वहाँ आये नारद के समक्ष राजा अश्वपति ने सावित्री से पूछा तुमने किसको अपना पति चुना है ? तब उसने बताया - शत्रुओं ने जिनका राज्य छीन लिया जो वन में रहते हुए तप कर रहे हैं उन नेत्रहीन शल्वदेश नरेश द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान को मैंने मन से वर लिया है । उस समय नारद ने कहा सत्यवान की आयु एक वर्ष शेष रही है, फिर वह मर जायेगा । जब राजा ने सावित्री को दूसरा वर खोजने के लिये कहा तो उसने मना कर दिया । तब नारद यह कह कर चले गये कि सावित्री का विवाह निर्विघ्न हो ।

राजा अश्वपति ने अपनी पुत्री का विवाह सत्यवान के साथ कर दिया । फिर नारद के बताये अनुसार मृत्यु का दिन आया तब सत्यवान फरसा लेकर फल लाने के लिये वन को चले तो सावित्री उनके साथ हो गई । फल तोड़ने के बाद सत्यवान के सिर में पीड़ा होने लगी तो वे भूमि पर लेट गये । उस समय वहाँ यमराज आये और सत्यवान की आत्मा को लेकर जाने लगे तो सावित्री भी उनके पीछे-पीछे चली । यमराज ने सावित्री के पतिव्रत धर्म से प्रभावित होकर सत्यवान को जीवित कर दिया, तब वे दोनों अपने आश्रम पर लौट आये । फिर राजा द्युमत्सेन के नेत्रों में ज्योति आ गई और उन्हें राज्य की प्राप्ति हो गई । सत्यवान युवराज के पद पर आसीन हुए । यह कथा सुनाकर मार्कण्डेय मुनि ने कहा - द्रौपदी भी सावित्री की भाँति कुल का उद्धार करेगी ।

कुमारी कुन्ती ने सूर्य द्वारा प्राप्त किये अपने बालक को लकड़ी की सन्दूक में रखकर लोकलाजवश अश्व नदी में बहा दिया । वह सन्दूक चर्मण्वती और यमुना में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई गंगा नदी में जा पहुँची । वहाँ धृतराष्ट्र का मित्र अधिरथ नामक सूत अपनी स्त्री राधा के साथ स्नान करने गया था । उसने उस सन्दूक से लड़का प्राप्त कर उसका नाम वसुषेण (कर्ण) रखा । कुन्ती को दूतों द्वारा यह जानकारी मिल गई । वह लड़का 'कर्ण' बड़ा होकर हस्तिनापुर में द्रोणाचार्य के पास पढ़ने लगा । तब उसकी दुर्योधन से मित्रता और पाण्डवों से शत्रुता हो गई ।

पाण्डवों को वन में रहते हुए बारह वर्ष वीत गये, तब उनका हित करनेवाले इन्द्र ने कर्ण से उसके कवच एवं कुण्डल माँगने का विचार किया तो, कर्ण के पिता सूर्यदेव ने कर्ण को यह भिक्षा न देने को कहा । किन्तु उसने अपने पिता की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया । इस कथा को सुनाते हुए वैशम्पायन ने जनमेजय को बताया - एक दिन इन्द्र ब्राह्मण का वेश बनाकर कर्ण के पास आये और भिक्षा में उससे उसके जीवन रक्षक कवच तथा कुण्डल प्राप्त कर लिये । यह जानकर कौरव दुःखी और पाण्डव प्रसन्न हुए ।

जब पाण्डव द्वैतवन में आ गये तव एक ब्राह्मण ने उनसे कहा - मेरी अरणी, मथानी अपने सींग में उलझाकर एक हिरण ले गया है । आप उसे ला दीजिये, जिससे कि मेरे अग्निहोत्र का नाश न हो । यह सुनके पाण्डव उस हिरण को पकड़ने दौड़े, किन्तु वह उन्हें नहीं मिल पाया, तो भूख प्यास से व्याकुल हो कर वे एक वटवृक्ष की छाया में जा बैठे । फिर नकुल ने वृक्ष पर चढ़कर जल का स्थान देखा, और वहाँ पहुँचकर जल पीने तथा लेने की इच्छा की तो उन्होंने यह आकाशवाणी सुनी कि मेरे प्रश्नों का उत्तर देकर जल पीओ । प्यासे नकुल ने उस वाणी का अनादर करके जल पिया तब वे पृथ्वी पर गिर पड़े । नकुल देर तक नहीं आये, यह देखकर युधिष्ठिर ने क्रमशः सहदेव, अर्जुन और भीम को भेजा तो उनके साथ भी ऐसा ही हुआ । तत्पश्चात् युधष्ठिर ने जाकर सभी प्रश्नों के उत्तर दिये । **इस प्रसंग को यक्ष युधिष्ठिर संवाद के नाम से वैदिक लेखमाला के ४८ वें पुष्प में हम प्रकाशित कर चुके हैं** । तब उस सरोवर का स्वामी यक्ष बोला - तुम अपने चारों भाइयों में से जिस एक को कहो वही जी जाये । उस समय युधिष्ठिर ने कहा - नकुल जी जाये । तब यक्ष के यह पूछने पर कि "तुम भीम अर्जुन को त्याग कर नकुल को जिलाने की इच्छा क्यों करते हो ?" युधिष्ठिर बोले - मै कुन्ती और माद्री को समान मानता हूँ । यह सुनकर यक्ष ने चारों भाइयों को जीवन दान दे दिया, और बताया मैं तुम्हारा पिता धर्म हूँ । फिर अपने पुत्र युधिष्ठिर को ब्राह्मण की अरणी सहित मथानी देकर कहा - अब तुम विराटनगर में छिपकर रहो । तत्पश्चात् पाण्डवों ने अपने आश्रम पर आकर ब्राह्मण को अरणी दे दी और मुनि धौम्य सहित सभी साथी ब्राह्मणों को यह कह कर कि "अब हम छिप कर रहेंगे "वहाँ से ससम्मान विदा किया ।

(अरण्यपर्व समाप्त हुआ)

प्रस्तुत संस्करण का कम्प्यूटर कार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* यह पुष्प - आर्यजगत् के गौरव *

श्री पूज्य महात्मा विरक्तदेव जी



एवं

श्री पूज्य आचार्य भद्रसेन जी



की
पावन
स्मृति
में सादर
समर्पित

* विनम्र - निवेदन *

आर्य बन्धुओ ! आपको यह जानकर अत्यन्त हर्ष एवं उत्साह की अनुभूति अवश्य होगी कि आदर्श वैदिक मिशनरी **श्री पूज्य पं० कमलेशकुमार जी आर्य 'अग्निहोत्री'** अपनी वाणी और लेखनी से आर्यजगत् की जो सेवा कर रहे हैं, यह आर्यजनों के लिये सदैव अविस्मरणीय रहेगी ।

* वैदिक लेखमाला से वैदिक मान्यताओं का विस्तार

श्री आचार्य कर्मवीर जी विवित्सु ने 'सरिया' (मध्यप्रदेश) से लिखा है - मेरे हाथों में इस समय प्रवचन माला के ५५, ५६, ५७ तीन पुष्प हैं, ये पुष्प... मैनें आलमारी में अत्युपयोगी न समझकर रख दिये थे । किताबें ढूँढते हुए अचनाक हाथों में आ जाने से आद्योपान्त पढ़े बिना न रह सका, सच पूछें बन्धु अत्यधिक प्रभावित हूँ ।... आपकी लेखन शैली अत्यन्त प्रभावकारी सुन्दर एवं चमत्कार पूर्ण है । इन्हें पढ़कर और पुष्प पढ़ने की तीव्र इच्छा जागृत हुई है । कृपया आगामी पुष्प आप अति शीघ्र भेजने की कृपा करें ।...

* विशेष ध्यान देने योग्य *

आपके पास हम अपने व्यय से वैदिक लेखमाला के पुष्प निःशुल्क भेजते हैं । इस सम्बन्ध में हमारा यह निवेदन है कि आप को जब-जब भी हमारे यहाँ से प्रेषित पुष्प प्राप्त हों, तब-तब आप इन्हें आद्योपान्त पढ़कर अपने विचारों से हमें अवगत अवश्य कीजियेगा ।

आपकी ओर से सूचना प्राप्त होने पर ही हम आगामी पुष्प आपके पास भेज पायेंगे । हम अपने यहाँ की पुस्तकें उन्हें ही भेजना चाहते हैं जो स्वयं पढ़ें और दूसरों को पढ़ावें, क्योंकि हमारा उद्देश्य वैदिकधर्म प्रचार है । कृपया इस पवित्रकार्य में आप हमारे सहायक बनिये । **डॉ० वीररत्न आर्य**

महामन्त्री -पं० कमलेशकुमार वैदिक लेखमाला प्रकाशक न्यास
आर्यसमाज, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)-३०५ ८०१.

संस्करण प्रकाशन तिथि

TYPE SETTING BY SOFT COMPUTERS PH:079-5453764

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

वैदिक लेखमाला का ६७ वाँ पुष्प

महाभारत का सार

भाग - ३

विराटपर्व एवं उद्योगपर्व का सार

लेखक

वैदिक मिशनरी कमलेशकुमार आर्य अग्निहोत्री

प्रकाशक - पं० कमलेशकुमार वैदिक लेखमाला प्रकाशक न्यास
आर्यसमाज मदनगंज - किशनगढ़ (राजस्थान) पिनकोड ३०५ ८०१
दूरभाष - कार्यालय (०१४६३) २४४०७० निवास (०१४५) २६६२६६२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० कमलेशकुमार वैदिक लेखमाला प्रकाशक न्यास की स्थिरनिधि में
योगदान करने वाले यशस्वी दानदाता

५५०००.०० पूज्य स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती, उदयपुर (राज.)
५००००.०० श्रीमती शिवराजवती ओंकारनाथ धर्मार्थ ट्रस्ट, मुम्बई

३१०००.०० श्री इन्द्रजीत जी भाटिया, नासिक द्वारा श्री पूज्य पिता हरीचन्द जी की पुण्य स्मृति में
३००००.०० श्री पुरुषोत्तम अमुलदास रामाणी, चेयरमेन एण्ड मैनेजिंग डायरेक्टर गुजट्रोन अहमदाबाद (गुजरात)
२५०००.०० आर्यसमाज मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)
२१५५१.०० श्रीमती निर्मलादेवी कमलेशकुमार आर्य, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)
२००००.०० श्री आचार्य भद्रसेन धर्मार्थ न्यास अजमेर (राजस्थान)
११११९.०० श्री अशोककुमार चन्द्रलाल अम्बवाणी की पुण्यस्मृति में "अशोक फाउण्डेशन" अहमदावाद
११०००.०० श्रीमती जसुमती बहिन श्री गंगारामभाई भवानी, पनवेल (महाराष्ट्र)
११०००.०० आर्यसमाज गाँधीधाम-कच्छ
११०००.०० श्री बलदेवराज जी चौधरी वेदप्रचार मण्डल आणंद (गुजरात)
१००००.०० श्रीमान सेठ दुल्हनोमल गामनदास डुलानी, कुबेरनगर अहमदावाद
५२५१.०० श्रीमान सेठ मथुराप्रसाद जी ओमप्रकाश जी नवाल राजगढ़ (अजमेर)
५१००.०० श्रीमती अलकादेवी श्रीगणेश जी कुमावत, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)
५१००.०० श्रीमती गुलाबदेवी भगवानदत्त जी शर्मा, गाँधीधाम-कच्छ
५१००.०० श्रीमान सेठ श्यामसुन्दर जी आर्य, दिल्ली
५०००.०० श्री विश्वभूषण जी आर्य, मुम्बई
५०००.०० श्री मोहनदास मेवलदास सुगाणी, कुबेरनगर - अहमदावाद (गुजरात)
५०००.०० श्रीमती वींझीदेवी नेंभराज जादवाणी, ग्वालियर (म.प्र.)
५०००.०० श्रीमती मीरादेवी नन्दलाल जादवाणी एवं परिवार, अहमदावाद
५०००.०० श्री गोरधनभाई हून्दराजमल रामरखियाणी की पुण्यस्मृति में उनके परिवार की ओर से
५०००.०० श्री कर्मचन्द जी की पुण्यस्मृति में श्री रतनलाल जी खूबाणी, सैजपुर बोघा-अहमदावाद
५०००.०० श्री चन्द्रकान्त रामरखियाणी, पूजा फर्निचर, नरोड़ा रोड़, अहमदावाद (गुजरात)
५०००.०० श्री अर्जुनभाई बी. पटेल, श्री विजयलक्ष्मी टिम्बर मार्ट, नरोड़ा रोड़, अहमदावाद (गुजरात)
५०००.०० श्री हिम्मत जी श्री कस्तूर जी गहलोत, अहमदावाद (गुजरात)
५०००.०० श्री प्रभुलाल जी लढ्ढा, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)
५०००.०० श्री डाह्याभाई श्री करसनभाई पटेल, नवानगर (गुजरात)
५०००.०० अग्रवाल श्री ज्वालाप्रसाद जी श्री घनश्यामदास जी, जलगाँव (महाराष्ट्र)
५०००.०० श्रीमान सेठ द्वारकाप्रसाद जी श्री कोटूमल जी प्रितमाणी, अहमदावाद (गुजरात)
५०००.०० श्रीमती हीराबहिन श्री धनजीभाई वेलाणी, मगोडीलाट (गुजरात)
५०००.०० श्रीमती चन्द्रदेवी श्री भगवानदास रामाणी, थलतेज अहमदाबाद (गुजरात)
५०००.०० श्री पुरुषोत्तमभाई श्री वालजीभाई वेलाणी, गाँधीधाम-कच्छ
५०००.०० आर्यसमाज दत्तएपार्टमेण्ट, बड़ौदा (गुजरात)
५०००.०० श्रीमती भारतीदेवी श्री भगवानदेव जी आर्य अहमदाबाद (गुजरात)
५०००.०० श्रीमती ईश्वरीबाई श्री जेठानन्द जी भाटिया, कुबेरनगर - अहमदावाद (गुजरात)
५०००.०० श्रीमती रत्नादेवी जी श्री बंशीलाल जी उपाध्याय, रायपुर (मध्यप्रदेश)
५०००.०० डॉ० श्री महेशदत्त जी श्रीवास्तव, टूण्डला (उत्तर प्रदेश)
५०००.०० श्रीमान सेठ चन्दूलाल जी अग्रवाल जयभारत टेक्सटाइल, अहमदावाद
५०००.०० श्री ओमप्रकाश जी आलमपुरिया (आर्य) अहमदाबाद (गुजरात)
५०००.०० श्री क्षेमराज जी शर्मा की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र श्री शुद्धबोध जी शर्मा (श्रीगंगानगर)
५०००.०० आर्यसमाज, देवलाली बाजार, कुबेरनगर - अहमदाबाद
५०००.०० श्रीमती सुखदेवी हरिशचन्द्र, श्रीवास्तव एवं परिवार, अहमदाबाद
५०००.०० श्रीमती रतनबेन श्री विश्राम पटेल सर्वोदय ट्रस्ट घाटकोपर, मुम्बई
५०००.०० श्री लक्ष्मणकुमार जी श्री दिनेशकुमार जी आर्य, सावर (अजमेर)
५०००.०० श्री झाऊलाल जी शर्मा, आर्यसमाज कांकड़वाडी, मुम्बई
५०००.०० मातृश्री धनदेवी केशवराम धर्मार्थ वैदिक ट्रस्ट, भूड बरेली (उ.प्र.) द्वारा श्री गोपालशरण विद्यार्थी
५०००.०० श्रीमती प्रवीणा चन्द्रकान्त आनन्दनगर टीम्बावाड़ी जूनागढ़
५०००.०० श्रीमती चन्द्रभागा पिता श्री महालप्पा जी कटके, गुलवर्गा की पुण्यस्मृति में
५०००.०० श्री आचार्य हरिदेव जी आर्य श्रीमती सुशीला जी आर्या, दिल्ली
५०००.०० श्रीमती अयोध्याबाई धर्मपत्नी श्री प्रह्लादसिंह जी परमार, पोलाय खुर्द खाटसूर (शाजापुर)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विराटपर्व का सार

(अध्याय ६७, श्लोक १८२४)

वनवास के बारह वर्ष बीत जाने पर तेरहवें वर्ष का अज्ञातवास **राजा विराट** के यहाँ व्यतीत करने का निश्चय करके **युधिष्ठिर** ने अपने भाइयों से पूछा कि "हम लोग वहाँ क्या कार्य करेंगे ? यह बताओ।" अपने लिये **युधिष्ठिर** ने कहा मैं **'कंक'** नाम से अपने आपको ब्राह्मण कहूँगा, और अपना कार्य जुआ खेलने का बताऊँगा। **भीम** ने अपना नाम **बल्लव** और काम भोजन बनाने, **अर्जुन** ने अपने आप को **बृहन्नडा** नामवाला बताकर स्त्रियों को नाच-गान-वाद्य का प्रशिक्षण देने, **नकुल** ने **ग्रन्थिक** नाम से घोड़ों को सम्भाल ने, **सहदेव** ने **तन्तिपाल** नाम से गौशाला की देख रेख करने और **द्रौपदी** ने अपना **सैरन्ध्री** नाम बताकर रानी **सुदेष्णा** की परिचर्या हेतु रहने के लिये कहा। तब मुनि **धौम्य** ने राजा के यहाँ रहते हुए किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है, उन्हें यह बताया।

तदनन्तर **पाण्डव द्रौपदी** सहित **विराटनगर** की ओर चले, और वहाँ पहुँचकर नगर के बाहर श्मशान के समीप स्थित एक विशाल शमीवृक्ष पर अपने अस्त्र-शस्त्र छिपा दिये। फिर अपने गुप्त नाम क्रमश: **जय, जयन्त, विजय, जयत्सेन** तथा **जयद्बल** रखकर उन्होंने नगर में प्रवेश किया, और एक-एक करके **युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, सहदेव** तथा **नकुल** राजा विराट के पास तथा **द्रौपदी** रानी **सुदेष्णा** के पास जाकर पूर्व निश्चित किये गये अपने-अपने नाम और काम बताकर उनके यहाँ नौकरी करने लगे। **राजा विराट** उनके व्यवहार से बहुत प्रसन्न और सन्तुष्ट रहते थे।

चौथे महीने में वहाँ एक मेला लगा। उस अवसर पर आये मल्लों में से एक **जीमूत** नामक मल्ल ने ताल ठोक कर ललकारा तो उसके सामने कोई नहीं गया। तब **भीम** ने राजा **विराट** से आदेश प्राप्त कर अखाड़े में उस मल्ल को पीस डाला।

युधिष्ठिर ने **राजा विराट** तथा उनके पुत्रों को जुए का खेल खिलाकर, **भीम** ने **जीमूत** मल्ल को मारकर, **अर्जुन** ने रनिवास की स्त्रियों को नाच-गान सिखाकर **नकुल** घोड़ों को प्रशिक्षित कर और **सहदेव** ने गायों एवं बैलों की नस्ल सुधारकर **विराटराज** को बहुत हर्षित किया। तब तक **मत्स्यनगर** में रहते हुए उनके दस महीने बीत गये।

द्रौपदी, **रानी सुदेष्णा** के महल में उसकी सेवा कर रही थी, तब एक दिन **राजा विराट** के सेनापति (**सुदेष्णा** के भाई) **कीचक** ने उसे देख लिया, और काम से व्याकुल होकर **द्रौपदी** से बोला - मैं अपनी सभी स्त्रियों को छोड़कर सदा तुम्हारे वश में रहूँगा तो, **द्रौपदी** ने कहा - पर स्त्री के प्रति ऐसा बुरा विचार रखना उचित नहीं है। मुझ दासी को तुम क्यों चाहते हो ? यह सुनकर **कीचक सुदेष्णा**

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पास गया और बोला - यदि **'सैरन्ध्री'** मेरे वश में नहीं होगी तो मैं अपने प्राण त्याग दूँगा । तब **सुदेष्णा** ने **सैरन्ध्री** से कहा - **कीचक** के घर जाकर मेरे लिये शराब लाओ तो **द्रौपदी** ने मना कर दिया । फिर भी **सुदेष्णा** ने यह कह कर कि **कीचक** तुम्हें मारेगा नहीं । शराब लाने के लिये उसे खाली पात्र दे दिया । उसे लेकर **द्रौपदी कीचक** के घर पर पहुँची उस समय उसका दाहिना हाथ पकड़ कर **कीचक** ने कहा - आज मेरी रात सुख से बीतेगी, तुम्हारे लिये शय्या तैयार कर रखी है, आओ मेरे साथ शराब पीओ ।

द्रौपदी ने झटककर **कीचक** से अपना हाथ छुड़वाया तो उसे भूमि पर पटक कर **कीचक** ने लात मारी । तब वह रोती हुई **युधिष्ठिर** की शरण में गई । फिर उसने **विराट राजा** को घटी घटना की जानकारी दी तो **विराटराज** बोले -वृत्त को जाने बिना मैं न्याय कैसे कर सकता हूँ । यह सुनकर वहाँ बैठे **भीम** को बहुत क्रोध आया, किन्तु **युधिष्ठिर** के संकेत से वह शान्त हो गया । **युधिष्ठिर** ने **द्रौपदी** को रानी **सुदेष्णा** के महल में भेज दिया, वहाँ जाकर उसने रानी को आप बीती सुनादी । फिर वह **भीम** के पास जाकर रोने लगी । तब **भीम** ने **कीचक** को मारने की प्रतिज्ञा की, और **द्रौपदी** से कहा नृत्य घर रात में सूना रहता है, तुम वहाँ रात में **कीचक** को भेजने का यत्न करो ।

वह रात बीतने पर **कीचक** राजभवन में गया, और **द्रौपदी** से बोला - यहाँ तुम्हारी रक्षा करनेवाला कोई नहीं है । **मत्स्यदेश** का राजा वास्तव में तो मैं हूँ, **विराटराज** नहीं । तब **द्रौपदी** ने **कीचक** से कहा - तुम रात में नाचघर में आना, मैं तुम्हें वहाँ मिलूँगी । फिर यह जानकारी उसने **भीम** को दे दी । तो **भीम** वहाँ चादर ओढ़कर लेट गया । रात में **कीचक** वहाँ पहुँच कर बोला - मैं तुम्हारे लिये सुन्दर आभूषण लाया हूँ । तब **भीम** ने वेग से उठकर **कीचक** के हाथ, पैर सिर तोड़ डाले और उन्हें उसके पेट में प्रविष्ट कर के **द्रौपदी** को दिखा दिया तो उसने पहरेवालों को सूचित किया, फिर उनसे जानकारी मिलने पर **कीचक** के बान्धव आकर रोने लगे । उस समय **उपकीचक** बोला - सैरन्ध्री को **कीचक** के साथ जला दो, क्योंकि इसी के कारण **कीचक** मरा है । तत्पश्चात् वे **राजा विराट** से आज्ञा लेकर **द्रौपदी** को **कीचक** की अर्थी के साथ बाँध श्मशान की ओर चले । तब **द्रौपदी** का विलाप सुनकर **भीम** दौड़े ओर उन्होंने एक सौ पाँच सूतों को मार के **द्रौपदी** को बन्धन मुक्त कर दिया तो वह रानी **सुदेष्णा** के पास पहुँची । उस समय **विराट** के कहे अनुसार **रानी सुदेष्णा** बोली - **सैरन्ध्री** अब तुम यहाँ से कहीं चली जाओ, तो **द्रौपदी** ने कहा महाराज मुझ पर केवल तेरह दिन और कृपा करें, फिर मेरे पति मुझको यहाँ से ले जायेंगे ।

उधर **दुर्योधन** द्वारा पाण्डवों को ढूँढ़ने भेजे गये दूतों ने आकर कहा - हम सब स्थानों पर गये, किन्तु हमें **पाण्डव** नहीं मिले, वे निश्चय ही मर गये होंगे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ ही उन्होंने यह सूचित किया कि **मत्स्य देश** के सेनापति **कीचक** और उसके बन्धुओं को गन्धर्वों ने मार डाला है । तब **कर्ण, द्रोणाचार्य, भीष्म** और **कृपाचार्य** ने कहा पाण्डवों को पुनः ढुँढवाओ । उस समय त्रिगर्त देश के राजा **शुशर्मा** के सुझाव से प्रेरित हुए कौरवों ने **विराटनगर** जाकर **राजा विराट** की हजारों गायों के समूहों को पकड़ लिया ।

तब ग्वालों के स्वामी गोप ने जाकर **राजा विराट** से कहा - त्रिगर्त देश के **राजा सुशर्मा** ने आपकी एक लाख गायें छीनली हैं । यह सुनकर **राजा विराट** अपने भाई **शतानीक, मदिराश्व, सूर्यदत्त** और पुत्र **शंख** के साथ **कंक, बल्लव,** गोपाल **(तन्तीपाल)** दामग्रन्थी **(ग्रन्थिक)** को लेके राजा **सुशर्मा** से युद्ध करने लगे । उस समय राजा सुशर्मा ने **विराट** को बन्दी बना लिया । तब पाण्डवों ने राजा **सुशर्मा** से **विराटराज** एवं उनकी गायों को छुड़वाया, इससे प्रभावित होकर **राजा विराट** ने **कंक (युधिष्ठिर)** से कहा आप मत्स्यदेश के राजा बनिये, मैं आपका अभिषेक करूँगा, क्योंकि आपने मुझे और मेरे राज्य को बचाया है । तब **युधिष्ठिर** बोले हम आपके वचन से ही प्रसन्न हैं ।

अपने तीन भाइयों एक पुत्र और चार पाण्डवों को साथ लेकर **राजा विराट** सेना सहित **त्रिगर्त राज सुशर्मा** से युद्ध करने गये, उसी दिन **दुर्योधन, भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, शकुनि, दुःशासन** आदि ने **विराटनगर** पर आक्रमण कर **विराटराज** के ग्वालों से साठ हजार गायें छीन लीं । तब **गोप** ने नगर में जाकर विराटराज के पुत्र भूमिंजय **उत्तर** नामक पुत्र से कहा - आप **कौरवों** से युद्ध करके गायें छुड़वा लीजिये, तो वह बोला - किसी कुशल सारथि के बिना मैं युद्ध नहीं कर सकता । उस समय **द्रौपदी** के कहने पर **उत्तर बृहन्नडा** को अपना सारथि बनाकर कौरवों से युद्ध करने पहुँचा । तब उनकी विशाल सेना को देखके वह घबरा गया, और **अर्जुन** को यह कह कर कि "मैं यह युद्ध नहीं कर पाऊँगा", वहाँ से भाग निकला । तब **अर्जुन** उसे पकड़ कर बोले - "तुम मेरे सारथि बनो, युद्ध मैं करूँगा" । फिर **शमीवृक्ष** पर छिपाये हुए अस्त्र-शस्त्र उससे उतरवाकर उसे अपना वास्तविक परिचय दे कौरव सेना के समक्ष ले गये ।

उस समय वहाँ **अर्जुन** द्वारा बजाये **शंख** और **गाण्डीव धनुष** की की गई टंकार से पृथ्वी काँप उठी । तब द्रोणाचार्य ने कहा - यहाँ **अर्जुन** आया है । यह सुनकर **दुर्योधन** बोला - अभी पाण्डवों के अज्ञातवास की अवधि समाप्त नहीं हुई, अतःइन्हें बारह वर्ष तक वन में और रहना पड़ेगा, किन्तु **भीष्म** ने बताया उसके अनुसार - समय की गणना के लिये कला, मुहूर्त्त, दिन, पक्ष, माह, नक्षत्र, ऋतु, से वर्ष गिने जाते हैं । इस दृष्टि से प्रति पाँच वर्ष में दो महीने बढ़ जाने के कारण तब तक तेरह वर्ष पाँच महीने और बारह दिन बीत चुके थे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब **दुर्योधन** ने यह कहा कि मैं पाण्डवों को राज्य नहीं दूँगा, तब कौरव महारथी युद्ध के लिये तैयार हो गये, तो **अर्जुन उत्तर** से बोले मेरे रथ को **दुर्योधन** की और ले चलो । वहाँ पहुँचकर **अर्जुन** ने अपना नाम सुनाके युद्ध में कौरव सेना को जीत लिया, और वे गायें दक्षिण दिशा से नगर की ओर भाग ग़ईं । तत्पश्चात् क्रमशः **दुर्योधन, विकर्ण, शत्रुन्तप, संग्रामजित, कर्ण, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, भीष्म, दुःशासन, दुःसह, विविंशति** आदि को युद्ध में मूर्च्छित कर **उत्तर** से उनके वस्त्र उतरवाये, उन्हें साथ ले के **अर्जुन** नगर में लौट आने के लिये प्रस्थित हुए और कौरव **भीष्म** की सम्मति से **हस्तिनापुर** चले गये ।

राजा **सुशर्मा** से युद्ध कर नगर में लौटे **विराटराज** ने यह जानकारी प्राप्त करके कि "उनका पुत्र **उत्तर बृहन्नडा के** साथ कौरवों से युद्ध करने गया है", उसकी सहायतार्थ जाने हेतु अपनी सेनाको आदेश दिया । उस समय दूत ने आकर बताया - "**उत्तर** विजयी होकर लौट रहे हैं" । तो **राजा विराट** बहुत प्रसन्न हुए, और अपने पुत्र की प्रशंसा करने लगे । तब **युधिष्ठिर** ने कहा - जिसका सारथि **बृहन्नडा** हो, वह युद्ध में क्यों न जीते ! यह सुनकर कुपित हुए विराटराज ने **युधिष्ठिर** की नाक पर जुए का पासा दे मारा, तो अपनी नाक से निकले रक्त को **युधिष्ठिर** ने अपने हाथ में ले लिया, भूमि पर नहीं गिरने दिया। क्योंकि **युधिष्ठिर** का रक्त भूमि पर गिरानेवाले का सर्वनाश करने की **अर्जुन** प्रतिज्ञा कर चुका थे ।

इस घटना के तत्काल पश्चात् **उत्तर** आ गया, और वह अपने पिता से बोला - मैंने युद्ध नहीं किया । मैं तो कौरवों की विशाल सेना को देखकर भागने लगा था, तब एक देवपुत्र ने मुझे रोका और उसने कौरवों को युद्ध में परास्त करके गौंओं को नगर में लौटाया है । वह देवपुत्र कल अथवा परसों प्रत्यक्ष होगा । तब तक **राजा विराट** पाण्डवों को नहीं पहिचान पाये थे । कौरवों के शरीर से उतरवाये वस्त्र लाकर **अर्जुन** ने **उत्तरा** को दे दिये, इसलिये कि उसने मँगवाये थे।

तीसरे दिन अपने अज्ञातवास की समाप्ति जानकर **युधिष्ठिर** राज सिंहासन पर जा बैठे, तो **राजा विराट** ने आपत्ति प्रकट की । उस समय **अर्जुन** ने कहा - हम **पाण्डव** हैं । यह जानकर **विराटराज** अपने पुत्र से बोले - हमने राजा **युधिष्ठिर** का बहुत अपराध किया है, इन्हें प्रसन्न करना चाहिये । फिर उन्होंने पाण्डवों से कहा - **अर्जुन** मेरी पुत्री **उत्तरा** को स्वीकार करे । तब **अर्जुन** बोले - **उत्तरा** को मैं पुत्री मानता रहा हूँ, इसका विवाह मेरे पुत्र **अभिमन्यु** के साथ कर दिया जावे । **अर्जुन** के कथन से सहमत होकर **युधिष्ठिर** तथा **विराटराज** ने अपने सम्बन्धियों के पास दूत भेजे । तत्पश्चात् **पाण्डव द्रौपदी** सहित **उपप्लव्य** नगर में जा बसे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूतों से सन्देश प्राप्त करके काशीराज शैव्य, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, श्रीकृष्ण, बलराम, कृतवर्मा, सात्यकि, हार्दिक्य, युयुधान, अनाधृष्टि, अक्रूर, निशठ, अभिमन्यु, सुभद्रा आदि विशाल सेनाओं के साथ विराटनगर में पहुँचे । वहाँ राजा विराट ने अपनी पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के साथ सम्पन्न करवादिया ।

(विराटपर्व समाप्त हुआ)

उद्योगपर्व का सार

(अध्याय १९७, श्लोक ६०६३)

अभिमन्यु का विवाह हो जाने के चार दिन पश्चात् पाँचों **पाण्डव, राजा द्रुपद, विराटराज, वसुदेव, बलराम, श्रीकृष्ण, सात्यकि, प्रद्युम्न, साम्ब, अभिमन्यु** आदि **विराट** की सभा में उपस्थित हुए । उस समय **श्रीकृष्ण** बोले - यह आप सब लोगों को विदित ही है कि **शकुनि** ने कपट से **युधिष्ठिर** को जुए में परास्त कर इनका राज्य छीन लिया, फिर वन जाने की शर्त रखी थी । पाण्डवों ने वह शर्त पूरी कर दी है । अब पाण्डवों को इनका अधिकार मिले, इस सम्बन्ध में हमें विचार करना है । मैं चाहता हूँ कोई ऐसा सुयोग्य दूत **हस्तिनापुर** भेजा जाय जो **युधिष्ठिर** को आधा राज्य देने के लिये **धृतराष्ट्र** को विवश कर सके ।

बलराम ने जुए की हार का दोषी **युधिष्ठिर** को बताकर कहा - कौरवों से विनम्रता का व्यवहार करना चाहिये । **सात्यकि** ने **बलराम** की इस सम्मति का विरोध किया, फिर राजा **द्रुपद** बोले - **दुर्योधन** मधुर व्यवहार से राज्य नहीं देगा, हमें अपनी सैन्यशक्ति बढ़ानी होगी । **श्रीकृष्ण द्रुपद** के कथन का समर्थन करके अपने सभी साथियों सहित **द्वारिका** चले गये, और राजा **द्रुपद** ने **दुर्योधन** के मनोभावों को जानने के लिये दूत के रूप में अपने पुरोहित को **हस्तिनापुर** भेजा ।

राजा विराट के यहाँ सभा में हुई चर्चा की जानकारी अपने गुप्तचरों से प्राप्त कर **दुर्योधन द्वारिका** पहुँचा, और सो रहे **श्रीकृष्ण** के सिरहाने की ओर रखे सिंहासन पर बैठ गया । उसी दिन **अर्जुन** भी वहाँ जाकर **श्रीकृष्ण** के चरणों की ओर खड़े हो गये । जागने पर **श्रीकृष्ण** ने उन दोनों को उनके आगमन का कारण पूछा, तो **दुर्योधन** बोला - युद्ध में मैं आपकी सहायता चाहता हूँ । तब **श्रीकृष्ण** ने कहा - मैं तुम दोनों को ही सहयोग दूँगा । अर्थात् एक ओर तो मेरी नारायणी सेना होगी, और एक ओर मैं युद्ध न करनेवाला शस्त्र विहीन रहूँगा । यह सुनकर **अर्जुन** ने **श्रीकृष्ण** को चुना, तो बहुत प्रसन्न होकर **दुर्योधन बलराम** के पास गया । तब उनसे यह सुनकर कि "मैं युद्ध में भाग नहीं लूँगा," वह **कृतवर्मा** से मिला, और उनसे एक अक्षौहिणी सेना प्राप्त कर **हस्तिनापुर** लौट गया । तत्पश्चात् **अर्जुन** की प्रार्थना पर युद्ध के समय उनके सारथि बनना स्वीकार कर **श्रीकृष्ण अर्जुन** के साथ **विराट** नगर गये ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाण्डवों का सन्देश प्राप्त कर **मद्रराज शल्य** अपनी विशाल सेना लेकर पाण्डवों के पास पहुँचने के लिये चले हैं, यह ज्ञात होने पर **दुर्योधन** ने मार्ग में उन्हें छल से अत्यधिक सुविधाएँ देकर अपनी सेना के अधि नायक बनने का उनसे वचन ले लिया । तत्पश्चात् **शल्य** ने **उपप्लव्य** नामक प्रदेश में जाकर **युधिष्ठिर** को यह जानकारी दे दी । तब **युधिष्ठिर** ने शल्य से कहा - युद्ध में आपको **कर्ण** का सारथि बनाया जायेगा । अतः आप हमारे हित में **कर्ण** को निरुत्साही करते रहें । शल्य ने **युधिष्ठिर** का यह निवेदन स्वीकार कर लिया । फिर उन्हें **इन्द्र, त्रिशिरा, वृत्रासुर, शची, नहुष** आदि की कथाएँ सुनाकर वे अपनी सेना सहित **दुर्योधन** के पास चले गये ।

तदनन्तर महारथी **युयुधान** (सात्यकि) चेदिराज **धृष्टकेतु**, मगधवीर **जयत्सेन**, जरासन्ध का पुत्र **सहदेव**, राजा **द्रुपद, मत्स्य नरेश विराट** आदि अपनी विशाल सेनाओं के साथ **युधिष्ठिर** के पास आ पहुँचे । अर्थात् पाण्डवों के पक्ष में युद्ध के लिये **सात अक्षौहिणी** सेना एकत्रित हुई । इसी प्रकार राजा **भगदत्त**, शूरवीर **भूरिश्रवा**, **राजा शल्य, कृतवर्मा**, सिन्धु राज **जयद्रथ**, कम्बोज नरेश **सुदक्षिण, राजा नील, राजा विन्दु** और **अनुविन्दु** आदि अपनी विशाल **ग्यारह अक्षौहिणी** सेनाओं सहित **दुर्योधन** के पक्ष में युद्ध करने के लिये उपस्थित हो गये ।

पाञ्चालराज द्रुपद के भेजे पुरोहित ने कौरवों से कहा - आपके द्वारा किये गये दुर्व्यवहार को भूलकर **पाण्डव** अब भी आपके साथ मेल-जोल रखना चाहते हैं । इसलिये सभी सुहृदों का यह कर्त्तव्य है कि वे **धृतराष्ट्र** को समझावें । **पाण्डव** जनसंहार किये बिना अपना राज्य पाना चाहते हैं । युद्ध में आपलोग पाण्डवों को जीत नहीं पायेंगे । **भीष्म** ने पुरोहित के कथन का समर्थन किया तो **कर्ण** ने कहा - **पाण्डव** अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार पुनः वन में विचरें । यह सुनकर **भीष्म** ने **कर्ण** को स्मरण कराया कि **विराटनगर** के युद्ध में अकेले **अर्जुन** ने हम छः अतिरथियों को धूल चटा दी थी । यदि हम पाण्डवों से युद्ध करेंगे तो **अर्जुन** के हाथों मारे जायेंगे । उस समय **धृतराष्ट्र** ने **कर्ण** को डाँटा, और यह कहकर कि "पाण्डवों के पास मैं **सञ्जय** को भेजूँगा" पुरोहित को लौटा दिया । फिर **सञ्जय** को बुलवाकर उसे कहा - तुम **उपप्लव्य** नामक स्थान पर जाकर हमारा हित हो वैसी बातें पाण्डवों से कहना । ऐसा कोई वचन मत बोलना जो युद्ध का कारण बने ।

सञ्जय उपप्लव्य नगर में पहुँचा, तब **युधिष्ठिर** बोले - मैं कौरवों के सभी अपराध क्षमा कर सकता हूँ । यदि वे मेरा राज्य मुझे वापिस लौटा दे । जब **सञ्जय** ने यह कहा कि आप वानप्रस्थ ग्रहण कर लीजिये, किन्तु कुटुम्ब का वध मत कीजिये । युद्ध करके राज्य लेने से तो भीख माँगकर खाना श्रेष्ठ है । तब **युधिष्ठिर** बोले -मेरा क्या कर्त्तव्य है, यह **श्रीकृष्ण** बतायेंगे । मैं इनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस समय **श्रीकृष्ण** ने **सञ्जय** से कहा - मैं कौरवों और पाण्डवों दोनों का हित चाहता हूँ । तुम कौरवों की स्वार्थ सिद्धि के लिये वाग्जाल फैला रहे हो । ये कुन्तीपुत्र यदि कौरवों का वध किये बिना अपने राज्य की प्राप्ति का कोई दूसरा उपाय जान लेंगे तो युद्ध नहीं करेंगे । फिर पाण्डवों और **द्रौपदी** के साथ कौरवों द्वारा किये गये घोर अन्याय का स्मरण कराके **श्रीकृष्ण सञ्जय** से बोले - यदि कौरवों के साथ पाण्डवों की सन्धि कराने में मैं सफल हो गया तो कौरव कुल विनाश से बच जायेगा । क्या **धृतराष्ट्र** के पुत्र मेरी बातों पर विचार करेंगे ? **पाण्डव** मेल-मिलाप और युद्ध दोनों के लिये तैयार हैं, तुम **धृतराष्ट्र** को यह बता देना । **युधिष्ठिर** ने कहा - यदि **दुर्योधन** हम पाँच भाइयों को **कुशस्थल, वृकस्थल, मासन्दी, वारणावत** तथा पाँचवाँ **कोई भी ग्राम** दे दे तो युद्ध नहीं होगा । हम चाहते हैं अपने कुटुम्बीजनों के साथ हमारी शान्ति बनी रहे ।

युधिष्ठिर से विदा लेकर **सञ्जय हस्तिनापुर** लौटे और **धृतराष्ट्र** से बोले - आपने द्युतक्रीड़ा के समय अपने स्वेच्छाचारी पुत्र की प्रशंसा और **शकुनि, कर्ण** आदि पर कृपा की, उसका दुष्परिणाम भोगने का समय आ गया है । अभी मैं थका हुआ हूँ, कल प्रातःकाल जब सभी कौरव सभा में एकत्र होंगे तब बताऊँगा **युधिष्ठिर** ने क्या कहा ।

सञ्जय के चले जाने पर **विदुर** को बुलवाकर उनसे **धृतराष्ट्र** बोले - **सञ्जय** मुझे बुरा भला कह कर गया है, कल सभा में **युधिष्ठिर** के वचन सुनायेगा । मैं **युधिष्ठिर** के विचार नहीं जान सका, इसी चिन्ता से मुझे नींद नहीं आ रही है । तब **विदुर** ने बताया - बलवान से भयभीत, साधन हीन, दुर्बल, कामी तथा चोर को नींद नहीं आया करती, आपका इन दोषों में से किसी दोष का सम्पर्क तो नहीं हो गया ? यह सुनकर **धृतराष्ट्र** ने **विदुर** से कहा - मैं तुम्हारे धर्म युक्त वचन सुनना चाहता हूँ । उस समय **विदुर** ने जो बताया वह **विदुर प्रजागर** अथवा **विदुरनीति** के नाम से प्रसिद्ध है । यह प्रसंग **''महाभारत का सार''** भाग-४ में **''महात्मा विदुर की वाणी का सार''** नाम से हमने पृथक् से प्रकाशित करवा दिया है । इसके अतिरिक्त उस समय **केशिनी, सुधन्वा, विरोचन, परमहंस दत्तात्रेय** आदि की शिक्षाप्रद कथाओं और महर्षि **सनत्सुजात** के उपदेशों को भी **धृतराष्ट्र** ने सुना ।

विदुर ने **धृतराष्ट्र** को समझाते हुए कहा - **दुर्योधन** के प्रति आपका मोह एवं **शकुनि, दुःशासन, कर्ण** पर किया गया विश्वास कहीं आपके सर्वनाश का कारण न बन जावे । इसलिये आप शीघ्र ही **युधिष्ठिर** को उनका राज्य वापिस लौटा दें, इसी में आपका भला है । इस प्रकार चर्चा में सारी रात बीती । फिर प्रातःकाल होने पर सब राजा लोग **सञ्जय** को सुनने सभा में आये । अर्थात् **भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, शल्य, कृतवर्मा, जयद्रथ, अश्वत्थामा, विकर्ण, सोमदत्त, बाह्लिक, युयुत्सु, धृतराष्ट्र, दुःशासन, शकुनि, दुर्मुख, दुःसह,**

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ण, **उलूक**, **विवंशति**, **दुर्योधन** आदि सभा में आकर यथास्थान बैठ गये । तब **सञ्जय** आकर बोले - **अर्जुन** ने कहा है कि यदि **दुर्योधन** महाराज **युधिष्ठिर** का राज्य नहीं छोड़ता तो इसका दुष्परिणाम उसे भोगना पड़ेगा । मैं **श्रीकृष्ण** के सहयोग से **दुर्योधन** को उसके सभी सगे सम्बन्धियों सहित मार डालूँगा । हम निश्चय ही विजयी होंगे ।

यह सुनकर **भीष्म** ने **दुर्योधन** को **बृहस्पति**, **शुक्राचार्य**, **इन्द्र** आदि की कथा सुनाकर कहा - तुम पाण्डवों से युद्ध करने का विचार छोड़ दो । यदि मेरी बात नहीं मानी तो कौरवों का विनाश अवश्य उपस्थित हो जायेगा । तुम्हारी बुद्धि **अर्थ** और **धर्म** दोनों से भ्रष्ट हो गयी है । इसीलिये तुम **कर्ण** **शकुनि** और **दु:शासन** के मत का अनुमोदन करते हो । **भीष्म** के कथन पर **कर्ण** को आपत्ति हुई तो **भीष्म** **धृतराष्ट्र** से बोले - तुम्हारे दुरात्मा पुत्रों पर महान संकट आनेवाला है, इसे तुम **कर्ण** की करतूत समझो । **द्रोणाचार्य** ने **भीष्म** के विचारों का समर्थन किया । उस समय **धृतराष्ट्र** के पूछने पर भयभीत **सञ्जय** यह बताकर मूर्च्छित होके गिर पड़े कि **युधिष्ठिर** युद्ध के लिये तैयार है । फिर होश आने पर उन्होंने पाण्डवों की युद्ध सम्बन्धी की गई तैयारी का विस्तृत वर्णन किया और उनकी ओर से युद्ध में भाग लेनेवाले महारथियों के नाम बताये । उन महारथियों के नाम सुनकर **धृतराष्ट्र** - **भीम**, **अर्जुन**, **नकुल**, **सहदेव**, **सात्यकि**, **श्रीकृष्ण**, **धृष्टद्युम्न** आदि के बल का स्मरण कर बहुत चिन्तित हुए । तब **सञ्जय** ने कहा - आपके पुत्रों ने पाण्डवों को सताया और जुए में परास्त किया तो आप प्रसन्न हुए थे । अब उनके पराक्रम की चर्चा कर आपका दुःखी होना व्यर्थ है ।

उस समय **दुर्योधन** ने **धृतराष्ट्र** से कहा यद्यपि **श्रीकृष्ण** हमारा विनाश करने पर तुले हुए हैं । किन्तु आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिये । क्योंकि पाण्डवों की अपेक्षा हमारे पास सैन्यबल अधिक है, और हमारे योद्धा उनसे कम नहीं है । हम उन्हें अवश्य ही पराजित कर देंगे । **पाण्डव** हम से भयभीत होकर केवल **पाँच गाँव** लेने की इच्छा करने लगे हैं ।

यह सुनकर **सञ्जय** ने **दुर्योधन** को बताया - **पाण्डव** युद्ध की अभिलाषा से प्रसन्न हो रहे है, भयभीत नहीं, और धृतराष्ट्र से कहा - पाण्डवों के पक्ष में **श्रीकृष्ण**, **सात्यकि**, **द्रुपद**, **धृष्टद्युम्न**, **शिखण्डी**, **राजा विराट**, **सूर्यदत्त**, **मदिराक्ष**, मगध नरेश **सहदेव**, चेदिराज **धृष्टकेतु** आदि युद्ध करने के लिये उतावले हो रहे हैं । तब **धृतराष्ट्र** ने **दुर्योधन** से कहा तुम पाण्डवों को उनका राज्य दे दो । युद्ध करने का विचार त्याग दो, पाण्डवों से सन्धि कर लो, क्योंकि **भीष्म**, **द्रोण** आदि भी युद्ध के पक्ष में नहीं है । तो **दुर्योधन** बोले - मैंने तथा **कर्ण** ने युद्ध की दीक्षा ली है, मैं किसी और के भरोसे युद्ध नहीं करूँगा । **दुर्योधन** के इस निश्चय को विनाशकारी मानकर **धृतराष्ट्र** ने उसे कहा - जब पाण्डवों के द्वारा कौरव सेना को तुम मार गिराई हुई देखोगे तब मेरे वचनों का तुम्हें स्मरण हो आयेगा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धृतराष्ट्र के यह पूछने पर कि **श्रीकृष्ण** और **अर्जुन** ने हमारे लिये क्या कहा ? **सञ्जय** बोले - **भीष्म** तथा **द्रोण** की उपस्थिति में **धृतराष्ट्र** को बता देना कि तुम्हारे ऊपर बहुत बड़ा भय आ पहुँचा है । तब **धृतराष्ट्र** ने **दुर्योधन** से कहा - इस कलह का अन्त करने के लिये पाण्डवों से सन्धि के सिवा और कोई उपाय नहीं है, किन्तु **दुर्योधन** अपने पिता के विचार से सहमत नहीं हुआ । उस समय **कर्ण** ने **दुर्योधन** को हर्षित करते हुए कहा मेरे पास **ब्रह्मास्त्र** है, मैं पाण्डवो को जीतने में समर्थ हूँ । यह सारा भार मुझ पर छोड़ दिया जाय । यह सुनकर **भीष्म** बोले -**कर्ण** ! तू क्यों अपनी वीरता की डींग हाँक रहा है, जान पड़ता है काल ने तेरी बुद्धि को ग्रस लिया है ।

भीष्म के इस कथन से रुष्ट होकर **कर्ण** यह कहके अपने घर चला गया कि मैं अपने अस्त्र-शस्त्र रख देता हूँ । अब **पितामह** मुझे सभा अथवा युद्ध भूमि में नहीं देखेगे । इनकी मृत्यु हो जाने पर समस्त भूपालों को रणभूमि में मेरा प्रभाव दिखाई देगा ।

दुर्योधन ने पुनः यह विश्वास व्यक्त किया कि युद्ध में विजय हमारी ही होगी । तब विदुर ने चिड़ीमार की कहानी सुनाकर **धृतराष्ट्र** को बताया - भाई-बन्धुओं से विरोध करना उचित नहीं है, आप **युधिष्ठिर** को अपना लीजिये । **धृतराष्ट्र** ने **दुर्योधन** से पुनः कहा तुम पाण्डवों के साथ भ्रातृभाव बढ़ाओ, किन्तु वह नहीं माना । जब **सञ्जय** ने **महर्षि वेदव्यास** और महारानी **गान्धारी** की उपस्थिति में **श्रीकृष्ण** की महिमा का गान किया तब **धृतराष्ट्र** ने **दुर्योधन** को कहा - तुम **श्रीकृष्ण** की शरण में जाओ । किन्तु उसने यह कहकर मना कर दिया कि वे **अर्जुन** के मित्र हैं ।

उधर **सञ्जय** के चले जाने पर **युधिष्ठिर** ने **श्रीकृष्ण** से कहा - युद्ध के लिये कौरवों को हम स्वयं ललकार रहे हैं, इस महान भय से हमारी रक्षा कीजिये । **धृतराष्ट्र** अपने पुत्र के वश में होने के कारण झुकना स्वीकार नहीं करेंगे । तब **श्रीकृष्ण** बोले - मैं दोनो पक्षों के हितार्थ सन्धि प्रस्ताव लेकर कौरव सभा में जाऊँगा । वहाँ मेरा जाना निरर्थक नहीं होगा, यदि हम सफल काम नहीं हो सके तो कोई बात नहीं, निन्दा से तो बच ही जायेंगे, तो **युधिष्ठिर** ने कहा - आप अवश्य जाइये ।

भीम श्रीकृष्ण से बोले -**दुर्योधन** सहनशील नहीं है, आप वहाँ कठोर वचन न बोलियेगा, हम शान्ति चाहते हैं । यह सुनकर **श्रीकृष्ण** ने कहा **भीम** ! आज आपको क्या हो गया, आप शान्ति की बात क्यों करते हैं ? तब **भीम** ने बताया हमारे कारण भरतवंशियों का विनाश न हो, हम यह चाहते हैं । **अर्जुन** और **नकुल** ने **श्रीकृष्ण** से कहा हमारे हित में जो उचित हो, आप वही कीजिये । किन्तु **सहदेव श्रीकृष्ण** से बोले - आपको ऐसा प्रयत्न करना चाहिये, जिससे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध होकर ही रहे । **सात्यकि** ने **सहदेव** के कथन का समर्थन किया तो वहाँ उपस्थित सभी योद्धाओं ने अपनी सहमति व्यक्त की । **द्रौपदी** ने **श्रीकृष्ण** से कहा सन्धि की इच्छा से प्रयत्न करते समय **दुःशासन** के हाथों खींचे हुए मेरे केशों को आप याद रखें । उसकी कटी भुजा को धूल में लोटती देखकर मुझे शान्ति मिलेगी, अतः युद्ध होना ही चाहिये ।

तदनन्तर रात्रि व्यतीत होने पर प्रातःकालीन **सन्ध्या-अग्निहोत्र** करके अस्त्र-शस्त्रों और सेना को साथ ले **उपप्लव्य नगर** से **श्रीकृष्ण** ने हस्तिनापुर के लिये प्रस्थान किया । फिर **वृकस्थल** नामक **ग्राम** में पहुँचकर उन्होंने **सायंकालीन सन्ध्या** की और वहाँ रात बिताई ।

श्रीकृष्ण के आगमन की सूचना दूतों द्वारा प्राप्त होने पर **धृतराष्ट्र** ने **भीष्म** की सम्मति से **दुर्योधन** को कह कर उनके स्वागत और आवास की व्यवस्था करवाई । तत्पश्चात् उनको दी जानेवाली भेंट की जानकारी **विदुर** को दी, तो **विदुर** ने कहा किसी प्रकार का प्रलोभन देकर **श्रीकृष्ण** को **अर्जुन** से पृथक् नहीं किया जा सकता । **दुर्योधन** भी यही मानकर **धृतराष्ट्र** से बोले - **श्रीकृष्ण** को आप रत्नादि भेंट में न दें, और न उनका सत्कार करें, नहीं तो वे यही समझेंगे कि हमलोग भय के मारे ऐसा कर रहे हैं । उस समय **भीष्म** ने **धृतराष्ट्र** से कहा **श्रीकृष्ण** को मध्यस्थ बनाकर पाण्डवों से समझौता कर लो । किन्तु **दुर्योधन** ने **भीष्म** की सम्मति को नहीं स्वीकारा , और कहा - मैं **श्रीकृष्ण** को बन्दी बना लूँगा । **दुर्योधन** के कथन से **धृतराष्ट्र** दुःखी होकर बोले - **श्रीकृष्ण** दूत बनकर यहाँ आ रहे हैं । उन्होंने हमारा कोई अपराध भी नहीं किया, फिर उन्हें बन्दी कैसे बनाया जा सकता है ? उस समय **भीष्म** यह कह कर सभाभवन से चले गये कि मैं इस दुर्बुद्धि पापी क्रूर **दुर्योधन** की अनर्थ भरी बातें नहीं सुनना चाहता ।

उधर प्रातःकाल उठकर नित्यकर्मों से निवृत्त हो **श्रीकृष्ण वृकस्थल** से **हस्तिनापुर** की ओर बढ़े । तब उनकी अगवानी के लिये गये **भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य** आदि के साथ वे नगर में पहुँचे और **धृतराष्ट्र** आदि से मिलकर **विदुर** के घर पर पधारे । वहाँ उन्होंने **विदुर** को पाण्डवों की सभी चेष्टायें कह सुनाईं । फिर वे अपनी बुआ **कुन्ती** से मिले तो वह अपने पुत्रों और **द्रोपदी** के साथ हुए दुर्व्यवहार का स्मरण करके रोने लगी, और **श्रीकृष्ण** से बोली - यह चौदहवाँ वर्ष है, मैंने अपने पुत्रों को नहीं देखा । तुम **युधिष्ठिर** से कहना तुम्हारे धर्म की बड़ी हानि हो रही है । **अर्जुन** तथा **भीम** को बताना - **क्षत्राणी जिस प्रयोजन के लिये पुत्र उत्पन्न करती है उसे पूरा करने का यह समय आ गया है** । **नकुल** और **सहदेव** पराक्रम से प्राप्त भागों को ही ग्रहण करे, यह ध्यान रखे । तत्पश्चात् **श्रीकृष्ण कुन्ती** को सान्त्वना देकर **दुर्योधन** के पास गये और वहाँ बैठे हुए **दुःशासन, कर्ण, शकुनि** आदि से मिले । उस समय उन्हें भोजन के लिये आमन्त्रित करने पर उन्होंने यह कह कर मना कर दिया कि दूत अपना प्रयोजन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्ध होने के पश्चात् ही भोजन और सत्कार स्वीकार करते हैं । **दुर्योधन** का अन्न दुर्भावना से दूषित है, मेरे लिये तो **विदुर** का ही अन्न ग्रहण करने योग्य है । यह बोल के **श्रीकृष्ण विदुर** के घर चले गये ।

विदुर के यहाँ भोजन कर रात को विश्राम कर रहे **श्रीकृष्ण** से **विदुर** ने कहा - **दुर्योधन** के पास आपका आना मेरी दृष्टि में उचित नहीं था । क्योंकि वह मर्यादाओं का अतिक्रमण कर चुका है । उसे सन्मार्ग पर ले आना सम्भव नहीं है, उसके साथ आप बात करें यह मुझे अच्छा नहीं लगता । तब **श्रीकृष्ण** बोले - मैं यह जानते हुए ही यहाँ आया हूँ । दोनों पक्षों का हित हो इसके लिये पूरा प्रयत्न कर लेने पर मैं निन्दा का पात्र नहीं बनूँगा ।

वह रात व्यतीत होने पर **श्रीकृष्ण** प्रातःकालीन सन्ध्या - अग्निहोत्रादि से निवृत्त हुए तब वहाँ **शकुनि** ने आकर उन से कहा **भीष्म, धृतराष्ट्र** आदि आपको याद करते हैं । तो वे कौरव सभा मे जाकर **सर्वतोभद्र** नामक सिंहासन पर विराजमान हो गये । तत्पश्चात् अन्य सभी राजा अपने-अपने आसनों पर बैठे । तब **श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र** को सम्बोधित करके बोले - मैं आप से यह प्रार्थना करने आया हूँ कि क्षत्रिय वीरों का युद्ध के लिये प्रयत्न किये बिना **कौरवों** और **पाण्डवों** में शान्ति स्थापन हो जाये । आप के पुत्रों ने मर्यादा तोड़ दी है । यह अत्यन्त भयंकर आपत्ति कौरवों ने ही प्रकट की हुई है । यदि इसकी उपेक्षा की गई तो सर्व विनाश निश्चित है । मैं चाहता हूँ दोनों पक्षों में सन्धि हो और आप पाण्डवों को उनका राज्य देकर मनोवाञ्छित भोग भोंगे । इत्यादि... **श्रीकृष्ण** के कथन के प्रति वहाँ उपस्थित राजाओं ने हृदय से अपनी सहमति व्यक्त की ।

उस सभा में उपस्थित **परशुराम** ने सम्राट **दम्भोद्भव** की कथा सुनाकर **दुर्योधन** को यह सम्मति दी कि युद्ध में मन मत लगाओ, पाण्डवों से समझौता करलो, और **मुनि कण्व** ने **श्रीकृष्ण** की महानता बताई । किन्तु **दुर्योधन** ने उन उपदेशों की अवहेलना करते हुए कहा - मेरी जैसी अवस्था है उसके अनुसार मैं वर्त्ताव करता हूँ, आप लोगों का यह प्रलाप क्या करेगा ? तदनन्तर **वेदव्यास, भीष्म, नारद** आदि ने दुर्योधन को समझाया, किन्तु वह नहीं माना । तब **धृतराष्ट्र** के कहने पर श्रीकृष्ण दुर्योधन से बोले - तुम्हारा भला इसी में है कि तुम पाण्डवों से सन्धि कर लो । **भीष्म** और **द्रोणाचार्य** ने **श्रीकृष्ण** के सुझाव का समर्थन किया ।

उस समय **दुर्योधन** ने **श्रीकृष्ण** से कहा - आप सभी मुझे दोष देते हैं । हमने तो पाण्डवों को उनका हारा राज्य लौटा दिया था । फिर वे जुआ खेलने वापिस क्यों आये ? जहाँ तक युद्ध का प्रश्न है - मैं यह मानता हूँ कि **पाण्डव** हमे जीत नहीं सकते । मेरे जीते जी पाण्डवों को भूमि का उतना अंश भी नहीं दिया जायेगा, जितना एक बारीक सूई की नोक से घिर जाता है । यह सुनकर **श्रीकृष्ण दुर्योधन** से बोले - तूने **शकुनि** के द्वारा छल से पाण्डवों को हरवाया है, और उनके साथ आरम्भ से अब तक अत्यन्त घृणित व्यवहार किया है । तुझे सब समझाते हैं,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु तू शान्त होने का नाम ही नहीं लेता । तब **दुःशासन** ने **दुर्योधन** से यह कहा कि यदि आप पाण्डवों से सन्धि नहीं करेंगे तो ये **भीष्म**, **द्रोण** आदि आपको, मुझे और **कर्ण** को बन्दी बनाकर पाण्डवों के अधिकार में दे देंगे ।

दुःशासन के कथन से कुपित होकर **दुर्योधन** वहाँ से चला गया, तो **धृतराष्ट्र** ने **विदुर** को भेजकर **गान्धारी** और **दुर्योधन** को बुलवाया । **गान्धारी** ने भी पाण्डवों से सन्धि कर लेने को कहा तो **दुर्योधन** ने अपनी माता के कथन की उपेक्षा करके **शकुनि**, **कर्ण**, **दुःशासन** के सहयोग से **श्रीकृष्ण** को बन्दी बनाना चाहा । यह ज्ञात होते ही **सात्यकि** ने **कृतवर्मा** से सेना को सावधान करवा के **श्रीकृष्ण** को सूचित किया । तब **श्रीकृष्ण** ने **दुर्योधन** को डाँटा । फिर **विदुर** के यहाँ जाकर कौरव सभा में जो हुआ वह सब **कुन्ती** को बता दिया ।

तदनन्तर **कुन्ती** ने **श्रीकृष्ण** से कहा - पाण्डवों को मेरा यह सन्देश सुनाना कि राजधर्म के अनुसार युद्ध करो, अपने बाप दादाओं के नाम को मत डुबाओ । उस समय **कुन्ती** ने **श्रीकृष्ण** को राजपुत्री **विदुरा** की कहानी सुनाई उसे सुनकर **श्रीकृष्ण उपप्लव्य** नगर में रह रहे पाण्डवों के पास लौट आये ।

श्रीकृष्ण के चले जाने पर **भीष्म** और **द्रोणाचार्य** ने **दुर्योधन** को पुनः समझाया, किन्तु वह कुछ बोला नहीं । फिर **धृतराष्ट्र** के पूछने पर **सञ्जय** ने बताया **उपप्लव्य** नगर को जाते समय **श्रीकृष्ण कर्ण** को अपने साथ रथ में बैठकर बोले तुम **कुन्ती** के प्रथम पुत्र हो, राज्य का अधिकार तुम्हें ही प्राप्त होगा, इसलिये तुम पाण्डवों के साथ हो जाओ । किन्तु कर्ण ने **श्रीकृष्ण** से यह कहकर कि "**दुर्योधन** के मुझ पर बहुत उपकार हैं, मैं उसके साथ विश्वासघात नहीं कर सकता । आप यह बात गुप्त रखें कि मैं **कुन्ती** का पुत्र हूँ।"

विदुर ने **कुन्ती** से कहा - युद्ध न हो तो अच्छा है । तब **कुन्ती कर्ण** के पास जाकर उससे बोली - "तुम मेरे पुत्र हो, राधा के नहीं" । उस समय **कर्ण** ने कहा - तुमने माता के समान अब तक मेरा कोई हित नहीं किया । अपने कल्याण की इच्छा से आज मुझे अपना पुत्र बता रही हो यह उचित नहीं है । मैं युद्ध तो कौरवों के पक्ष में ही करूँगा, किन्तु तुम्हारी बात रखने के लिये **युधिष्ठिर**, **भीम**, **नकुल** और **सहदेव** को नहीं मारूँगा ।

श्रीकृष्ण ने पाण्डवों को कौरव सभा में हुई चर्चा की विस्तृत जानकारी दे दी । तब **युधिष्ठिर** अपनी सात **अक्षौहिणी** सेना को **द्रुपद**, **विराट**, **धृष्टद्युम्न**, **शिखण्डी**, **सात्यकि**, **चेकितान** और **भीम** के नेतृत्व में व्यवस्थित करवाकर **श्रीकृष्ण** के निर्देशानुसार **कुरुक्षेत्र** में (सेनासहित) जा पहुँचे ।

उधर **दुर्योधन** ने **कर्ण**, **दुःशासन** और **शकुनि** को यह कहकर कि "अपने कार्य में असफल हुए **श्रीकृष्ण** पाण्डवों को उत्तेजित अवश्य करेंगे ।" अपनी सेना को तैयार करवाया । इसके अन्तर्गत **कृपाचार्य**, **द्रौणाचार्य**, **शल्य**, **जयद्रथ**, **सुदक्षिण**, **कृतवर्मा**, **अश्वत्थामा**, **कर्ण**, **भूरिश्रवा**, **शकुनि** और **बाह्लिक**

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेनापति निश्चित किये गेय । फिर **दुर्योधन** ने भीष्म से प्रधान सेनापति होने की प्रार्थना की तो उन्होंने कहा पहले **कर्ण** युद्ध करे अथवा मैं युद्ध करूँगा । जब कर्ण यह बोले कि भीष्म के जीते जी मैं युद्ध में भाग नहीं लूँगा, तब **दुर्योधन** ने **भीष्म** को प्रमुख सेनापति बना दिया ।

इधर **बलराम** पाण्डवों के पास आये और उन्हें यह कहकर चले गये कि मैं कौरवों को अपने सम्मुख नष्ट होते हुए नहीं देख सकता । क्योंकि आपकी भाँति वे भी मेरे सम्बन्धी हैं । उस समय विदर्भ के राजा **भीष्म** के पुत्र **रुक्मी** अपनी सेना सहित पाण्डवों के पास आकर बोले - यदि तुम लोग युद्ध में शत्रुओं से डरते हो तो मैं तुम्हारी सहायता करूँगा, तो **अर्जुन** ने कहा हमें कोई डर नहीं है, आपकी सहायता नहीं चाहिये । तब उन्होंने **दुर्योधन** के पास जाकर वैसे ही कहा और उनसे भी वही उत्तर पाया, इसलिये उस युद्ध से **बलराम** और **रुक्मी** पृथक् रहे । कुरुक्षेत्र में कौरवों और पाण्डवों की सेनाएँ एकत्रि हो जाने पर **दुर्योधन** ने **शकुनि** तथा **दुःशासन** की सम्मति से **कितव पुत्र उलूक** को यह कहकर पाण्डवों के पास भेजा कि **अर्जुन** को बोलना तुमने **सञ्जय** के सामने अपने पराक्रम की जो प्रशंसा की थी, उसे दिखाने का समय आ गया है । **द्रौपदी** के क्लेश का स्मरण करके तुम पुरुष बन जाओ । उस मूर्ख भीम से कहना तुम अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार **दुःशासन** के रुधिर का पान करो, तो उलूक ने **युधिष्ठिर** को सब बता दिया । तब **श्रीकृष्ण** उससे बोले - तुम **दुर्योधन** को कहना तेरा जैसा विचार है वैसा ही होगा । **उलूक** ने लौटकर **दुर्योधन** को यह जानकारी दे दी ।

उस समय **भीष्म** और **द्रोणाचार्य** ने **दुर्योधन** को कौरव पक्ष की विजय का विश्वास दिलाया । तत्पश्चात् **भीष्म** ने कौरव सेना के अर्धरथियों, रथियों, महारथियों, अतिरथियों आदि वीरों के बल का विस्तृत वर्णन करके **दुर्योधन** को उत्साहित किया, और **शिखण्डी** को न मारने का कारण विस्तार से बताया । फिर कहा - मैं प्रतिदिन पाण्डवों के दस हजार योद्धाओं और एक हजार रथियों को मारूँगा । उस समय **द्रोणाचार्य** ने एक महीने में, **कृपाचार्य** ने दो महीनों में, **अश्वत्थामा** ने दस रातों में और **कर्ण** ने पाँच दिनों में **पाण्डव** सेना को नष्ट करने का अपना सामर्थ्य प्रकट किया तो **भीष्म** ने **कर्ण** के कथन की हँसी उड़ाई । यह ज्ञात होने पर **अर्जुन** ने कहा मैं **श्रीकृष्ण** की सहायता से निमेष मात्र में तीनों लोकों का संहार कर सकता हूँ । तदनन्तर प्रातःकाल होने पर दोनों ओर की सेनाएँ युद्ध करने के लिये चल पड़ीं ।

(उद्योगपर्व समाप्त हुआ)

प्रस्तुत संस्करण का कम्प्यूटर कार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❋ यह पुष्प - आर्यजगत् के गौरव ❋

श्री पूज्य महात्मा विरक्तदेव जी एवं श्री पूज्य आचार्य भद्रसेन जी



की
पावन
स्मृति
में सादर
समर्पित



❋ विनम्र - निवेदन ❋

आर्य बन्धुओ ! आपको यह जानकर अत्यन्त हर्ष एवं उत्साह की अनुभूति अवश्य होगी कि आदर्श वैदिक मिशनरी **श्री पूज्य पं० कमलेशकुमार जी आर्य 'अग्निहोत्री'** अपनी वाणी और लेखनी से आर्यजगत् की जो सेवा कर रहे हैं, यह आर्यजनों के लिये सदैव अविस्मरणीय रहेगी ।

❋ वैदिक लेखमाला के प्रति पाठकों के विचार ❋

बीसलपुर से श्री डॉ. सत्येन्द्रकुमार जी लिखते हैं...वैदिक लेखमाला के १६, १७, १८ वाँ पुष्प प्राप्त हुआ। नियोग की प्रथा, आर्यसमाज की मान्यताएँ तथा आर्यसमाज क्या नहीं मानता... आद्योपान्त पढ़ी। बड़े सरल, सुंदर व हृदयग्राही शब्दों द्वारा इस छोटी-छोटी लेखमाला द्वारा विचारों को प्रस्तुत करना बड़ा ही स्तुत्य प्रयास है।...

महात्मा श्री पूर्णानन्द जी बानप्रस्थी पिपराली से लिख रहे हैं... न्यास के पुष्प आर्यसमाज यह मानता है, आर्यसमाज यह नहीं मानता और नियोग की प्रथा प्राप्त हुए इन तीनों का स्वाध्याय चिन्तन-मनन पूर्वक किया । पण्डित जी ऋषि के भावों का स्पष्टिकरण बड़ी बुद्धिमत्ता से कर रहे हैं । नियोग के सम्बन्ध में तो बहुत अच्छी तरह समझाया गया है ।... इन पुष्पों का प्रचार अधिकाधिक हो ताकि साधारण पठित भी लाभ उठा सकें ।...

बडोदरा (गुजरात) से श्री प्रदीप जी शर्मा लिखते हैं... गाँधीधाम उत्सव के अवसर पर **"सैद्धान्तिक-चर्चा"** भाग १ से १० संयुक्तांक प्राप्त हुआ ।... सत्य सिद्धान्त शिव विचार और सुन्दर प्रकाशन इतनी सरल भाषा में प्रस्तुतीकरण मैंने तो आज तक कहीं देखा नहीं है ।...

डॉ० वीररत्न आर्य

महामन्त्री -पं० कमलेशकुमार वैदिक लेखमाला प्रकाशक न्यास
आर्यसमाज, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)-३०५ ८०१.

संस्करण

प्रकाशन तिथि

TYPE SETTING BY SOFT COMPUTERS PH:079-5453764

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.